इस्लाम क्या है ?

लेखक

शैखुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब

अनुवादक मा० अहसन अंसारी (नेशनल अवार्डी)

मकतबा अलफहीम
मऊनाथ भंजन-उ.प्र.

इस्लाम क्या है ?

लेखक

शैखुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब

अनुवादक

मा० अहसन अंसारी (नेशनल अवार्डी)

MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road

Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101

Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224

Email :faheembooks@gmail.com

Facebook : maktabaalfaheem

पुस्तक का नाम	इस्लाम क्या है?
लेखक	शैखुलइस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब
अनुवादक	मा० अहसन अंसारी (नेशनल अवार्डी)
प्रकाशक	मकतबा अलफहीम मऊ
प्रकाशन वर्ष	March, 2014
पेज	64
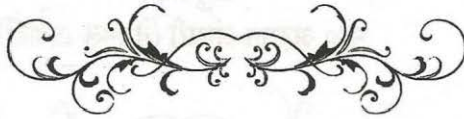
MAKTABA AL-FAHEEM
Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheembooks@gmail.com
Facebook : maktabaalfaheem

आरम्भ करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा ही कृपालू व दयावान है।

विषय सूची

प्रकाशक के दो शब्द

जीवन किसी उद्‌देश्य, किसी दृष्टि कोण के बिना बिताया नहीं जा सकता। जो लोग किसी अच्छे तथा बड़े उद्देश्य के बिना जीते हैं उनके जीवन को जीवन कहना व्यर्थ है। उनका जीवन मात्र एक बोझ बनके रह जाता है, जैसे जानवरों के समान ढोया जाता है। इन सबके सम्बन्धों को देखते हुए यदि मुसलमान के जीवन से तुलना की जाए तो हम मुसलमानों का जीवन एक सौभागयशाली जीवन कह लाने का पात्र नहीं हैं हमें इस्लाम ने एक ऐसा जीवन प्रदान किया जिसका एक महान उद्देश्य तथा एक व्यापक पैराय में इसकी व्याख्या की है कि आप अपने पैदा करने वाले को पहचान लो तथा उसी हस्ती पर निछावर अपना जीवन कर दो। उसी सज्दा को (माथा टेका) करो। उसके सिवा हरेक का भय मन से निकाल फेंको। हर पल उसी की सहमति चाहो उसी से लौ लगाओ तथा उसी की चाह में मर मिटो यही एक अकेला मार्ग है जिसपर चल कर लोक परलोक दोनों संसार में सफलता तुम्हारे कदमों को चुमे भी उसी मार्ग पर जब चलोगे तो मरणोप्रान्त परलोक मे तुम्हार स्वागत किया जाएगा।

यह बड़े दुख की बात है कि मुस्लिम कौम (जाति) को इतना महान उद्देश्य तथा दृष्टिकोण ईश्वर की ओर से प्रदान होने के अपेक्षा आज मुस्लिम समाज अमेरीका तथा यूरोपीय सम्यताओं के पीयछे भाग रहा है। उससे प्रभावित है। अमेरीका तथा यूरोप की नक्काली कर

रहा है, इस सभ्यता में इतना लीन है कि उसे अपने पूर्वजों की सारी परम्प्राओं को भूल गया है।

दुखः इस बात का है कि पाश्चात्य सभ्यता की नकल मुसलमानों ने यूरोपीय फैशन किसी अनुभव खोज की कसौटी पर परखकर उसके लाभ हानि को जांच कर ग्रहण नहीं किया, बल्कि वह उसकी चमक दमक से ही अपना होश हवाश खो बैठा। यूरोपीय देशों से जो कुछ इसने प्राप्त किया वह उसकी अस्ल सभ्यता तथा समाज नहीं वरना उसकी साइंस तथा टेक्नोलाजी है। ये आवश्यक था कि हमारे विद्वान विज्ञान की शिक्षा सीखते तथा उन्हें ईश्वरीय देन के अन्तर्गत मानवता के लिए एक साधन बना देते ये सब अदा करने की अपेक्षा हमारे आधुनिक प्रिय भाई अपने इच्छाओं के पीछे ऐसे भागे कि इस्लाम द्वारा प्रदान की हुई उच्च आदर भी उन्हें अजनबी लगने लगा। आज प्रायः मुसलमानों की स्थिति यह है कि वे अल्लाह रब्बुल इज्जत को मानते हैं, किन्तु अल्लाह तआला को वास्तविक रूप से जो मानने की ज़िम्मेदरियां उनकी अनदेखी करते हैं। जो विश्वास की पूजी है उसे खोचुके हैं। मस्जिदें विरानों में बदल गई हैं। अज़ान सुनते हैं किन्तु नमाज़ नहीं पढ़ते बहुतों के पास धन दौलत है किन्तु वे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते क्योंकि उनके यहां सूदी लेन देन चल रहा है। उनमें अन्य धर्मों के समान आधार्मिकता का प्रवेश हो चुका है। उनके यहां शादी विवाह में हिन्दुओं जैसे शादी विवाह के रस्म व रिवाज का प्रचलन प्रवेश पाचुका है। समाज में पुरूष महिला का मेल जोल आम हो चुका है। पुरूषों महिलाओं में किसी प्रकार का परदा शेष नहीं रह गया है। जो शर्म हया थी वे सभी लुप्त हो चुके हैं घर घर में गन्दी फिलमें देखने का प्रचलन है। ऐश परस्ती के चलते मन मस्तिस्क

चरित्र सभी कुछ दाव पर लग चुका है। धर्म के नाम पर अवैध धार्मिक कार्यों का प्रचलन तेज़ी से बढ़ रहा है। कुरआन मजीद मे जिस कार्य के लिए बार बार ताकीद की गई है कि शिर्क (अर्थात गैरों की पूजा या अल्लाह को छोड़कर अपनी आवश्यक्ताओं की पूर्ति के लिए किसी से गुहार लगाना या उने अपनी मन्नतें पूरी करने के लिए उनकी कब्रों पर माथा टेकाना यही शिर्क अज़ीम है जिसकी अल्लाह के यहां माफी नहीं तथा कब्रों पर जाने वाला या उसकी पूजा करने वाला हमेशा जहन्नम में रहेगा।) आज इसी को इस्लाम बताया जा रहा है जब कि यह सब निराधार है इस्लाम से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है आप तनिक गम्भीरता से सोचिए कि क्या यही मुसलमानों का समाज है मुस्लिम समाज क्या इस्लामी समाज कहलाने का पात्र हो सकता है आज इस्लामी उसूलों, नियमों को छोड़ने का क्या परिणाम है वह जग ज़ाहिर है। आज मुस्लिम कौम जिस गुमराही के दल दल में धंसती चली जा रही है इस दल दल से इसका निकलना सम्भव नहीं लग रहा है। आज मुसलमानों में जो पूर्व में एकता तथा भाई चारा पाया जाता था समाप्त हो चुका है। आज संसार के सभी गैर धर्मों मुसलमानों पर इस तरह टूट पड़े हैं जैसे जंगली दारिन्ता अपने शिकार पर टूट पड़ता है। आज के इस मुस्लिम समाज को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि जिस समाज को इस्लामी नियामों का पाबन्द होना चाहिए था आज वह इस्लाम का मार्ग छोड़ नये नये धर्मों को अपनाकर स्वयं को मुसलमान कहते गर्व करते हैं जबकि उनका इस्लाम से कुछ लेना देना है। जिस कार्य को करने की मनाही कुरआन ने बार बार की है तथा उस कार्य के करने की क्षमा नहीं है उसे ही इस्लाम का मुख्य अंग समझकर किया जा रहा है।

अल्लाह तआला सऊदी अरब के महान धर्मिक विद्वान शैख मुहम्मद बिन सुलेमान रह० पर हर पल उन पर अपनी कृपा करे जिन्होंने इस पुस्तक को लिखकर गुमराह तथा भटके मुसलमानों को इस्लाम का सीधा मार्ग दिखाया ताकि लोग इस्लमा की ओर पलट आएं। दीन धर्म को समझने का प्रथम नियम यह है कि अल्लाह तआला का परिचय तथा दूसरा दीन इस्लाम धर्म का नियम तथा इस्लाम की पहचान तथा तीसरा नीयम हज़रत मुहम्मद सल्ल० के विषय में जाननां इन तीनों अध्याओं में उन्होंने इस्लाम के मूल उसूलों तथा नियमों के विषय में सविस्तार व्यासख्या की है। उन्होंने यह भी बताया है कि एक मुसलमान के लिए यह अनिवार्य है कि वह अल्लाह के विषय को जानें तथा आं हुज़ूर सल्ल० के पवित्र जीवन से भलीं भांति परिचित हो। उक्त दोनों आवश्यक शर्तें हैं उनके उद्देश्यों का सारांस यह है कि एक सच्चे खरे मुसलमान एवं बुद्धि जीवी का यह दायित्व है कि सभी आदेशों को कुर्आन हदीस की रोशनी में देखें। तथा उसके प्रमाणों के अनुसार उस पर अमल करें। इस्लाम के इन नियमों उसूलों को वह घर घर पहुंचाएं।

महान लेखक ने उन सभी भूले भटके मानव समाज को सन्देश दिया है कि शिक्षा, विश्वास, शान्ति, संतुष्टि, सम्मान, प्रसन्नता का यदि जीवन जीना चाहते हो तो गुमराही का मार्ग छोड़ तथा अपने पापों से तौबा कर लो तथा अपने हृदय में अन्दोलात्मक परिवर्तन लाओ। अल्लाह तथा उसकी पहचान एवं उपासना में लग जाओ। हर एक मुनष्य के लिए उसका यही संदेश है।

लेखक में उपास्ना के कई प्रकार का वर्णन किया है। पुनः दीन की व्याख्या करते हुए इस्लाम, ईमान (आस्था) के अनेकों अध्याय को

उजागिर किया है।

लेखक ने इबादत उपासना के विभिन्न प्रकार का वर्णन किया है। फिर दीन धर्म की व्याख्या करते हुए इस्लाम, ईमान तथा एहसान के पाठ को उजागर किया है। उनके तीसरे नियम का अभिप्राय यह है।

इस अध्याय में उन्होंने हज़रत मूहम्मद सल्ल० अन्तिम नबी की मारिफत, महत्व प्राथमिक्ता आवश्यकता एवं लाभ को स्पष्ट किया है। उन्होंने नमाज़ के स्थापना पर अधिक बल दिया है तथा सावधान किया है।

इस पुस्तक के स्थाई महत्व तथा लाभ के अन्तर्गत दारूस्सलाम विभाग फिक: व अन्य "इसे इस्लाम क्या है?" के शिर्षक के अंतर्गत सरल उर्दू में लिखा है।

विश्व का प्रत्येक व्यक्ति जिसे सच्चाई तथा सफलता की तलाश है इस पुस्तक का आवश्यक रूप से अध्ययन करना चाहिए। विशेष रूप से मुसलमान पुरूष, महिला को कुरआन तथा सुन्नत को इस महान सूचना से अनभिग्य नहीं रहना चाहिए अल्लाह तआलाा मकतबा अलफहीम के इस अथक प्रयास को स्वीकार करे तथा हर ऐक मुसलमान को कुरआन तथा सुन्नत के दिखाए हुए सीधे मार्ग पर चालाए।

सम्पादक

प्रस्तावना

विश्व की वास्तविक धरोहर का नाम धर्म का परिचय है। धर्म की पहचान हिकमत दीन या تفقه فی الدین को कलाम बहय में महान नाम घोषित किया गया है। मज़हब शरीअत में एक ऐसी परिभाषा है जो कुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों पर अनेकों अर्थों में प्रयोग किया गया है इन सभी अर्थों का यदि इस्तेक्सा किया जाए तो पता चलता है ि इस से अभिप्राय एक पूर्ण जीवन व्यवस्था है जिसमें किसी भौतिक या सांसारिक पैवन्दको नहीं लगाया जा सकता। धर्म जीवन का वह नियम है जिसमें मनुष्य के एकान्त जीनवन से लेकर सामुहिक जीवन एवं अन्य सांस्कृतिक तथा प्रान्तीय संस्थाओं के लिए मार्ग दर्शन मौजूद है जिसे हक तआला जल्ले शानुहू ने निश्चित किया है तथा जिसका अमली प्रदर्शन एवं सम्भावनायें अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने अपनी पवित्र सुन्नत को स्थाई रूप में मानव समाज के समक्ष प्रस्तुत कर दिया है। इस सच्चे दीन (धर्म) की प्रारम्भिक तथा आवश्यक रूप से अपने कार्यों को सविस्तार सहित अपने अनुयायियों को मार्ग दर्शन के रूप में प्रस्तुत कर दिया है। जिसके विरूद्ध कार्य करना गुमराही, शिर्क (अवैद्ध देवी देवताओं की पूजा) दूराचार के अतिरिक्त कुछ और न होगा, अल्लाह तअला का इर्शाद है।

إِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الإِسْلاَمُ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتَابَ

إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْياً بَيْنَهُمْ وَمَن يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللّهِ
فَإِنَّ اللّهِ سَرِيعُ الْحِسَابِ　(آل عمران ٣:١٩)

अनुवाद- "निः सन्देह दीन (धर्म) अल्लाह के नज़दीक केवल इस्लाम ही है। इस धर्म से हटकर जो विभिन्न तरीके लोगों ने अपनाए, जिन्हें किताब दी गयी थी उनके ये सोचने का तरीका कोई अन्य कारण नहीं था, कि वे जानकारी आ जाने के बाद आपस में एक दूसरे पर ज़्यादती करने के लिए ऐसा किया तथा जो कोई भी अल्लाह के आदेशों (मार्ग दर्शन) के अनुपालन को नकारेगा तो अल्लाह को उसका हिसाब करने में तनिक भी विलम्ब नहीं होगा।"

यही इस्लामी धर्म मानव जाति की वह धारेहर है। जो इस सांसारिक जीवन में सफलता तथा प्रलोक में सफल एवं स्थाई पुरस्कार की ज़मानत है अफसोस की प्रथम युग के मुसलमानों के इस सच्चे धर्म की जानकारी तथा अमली सतह पर जिस परहेज़गारी तथा अल्लाह के लिए इसकी सुरक्षा की बाद के समय में दर्शन व कलाम, तथा सूफी मत एवं वेदान्त की अज़मी सोच ने उसमें एसी पैवन्द कारी की जिसके चलते आजतक الدين الخالص उम्मत अर्थात मुसलमानों के अनेकों वर्ग वंचित होकर अनचाहे पापों में जीवन व्यतीत कर रहे हैं, किताब सुन्नत का अध्ययन इस सच्चाई को खोलता है कि मुसलमानों में दीन (धर्म) की सुरक्षा हो तथा उसके प्रचार प्रसार के लिए एकनएक वर्ग को अवश्य उस पर अमल करना चाहिए। चाहे वह प्रचार प्रसार का अध्ययन हो या पठन पाठन का अध्ययन हो या लेखों का माध्यम हो, अल्लाह की प्रशंसा की हर एक

युग में कोई न कोई जमात या गिरोह इस महान उद्देश्य की प्राप्ती के लिए प्रयासरत रहा। इतिहास में इस प्रचार प्रसार निमंत्रण तथा सच्चे दीन (धर्म) की सुरक्षा एवं प्रकाशन में व्यस्त रहा है। यहां इसके विस्तार की आवश्यकता नहीं है जीवन के इस उद्देश्य को कुरआन ने यूं बयान किया है।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَآفَّةً فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ (التوبه ٩:١٢٢)

अनुवादः "यह अति आवश्यक न था कि ईमान वाले सब ही निकल खड़े होते, मगर ऐसा (भी) क्यों न हुआ कि इनकी आबादियों के हर एक भाग में कुछ लोग इस उद्देश के लिए निकल आते तथा दिन (धर्म) की सोच उत्पन्न करते तथा वापस जाकर अपने बस्ती के लोगों को सावधान करते ताकि वे लोग इस गैर इस्लामी रविश से परहेज़ करते।"

इस्लामी देश सऊदिया अरबिया में अलहरमैन शरीफैन के पवित्र स्थान में अल्लाह तआला ने एसे विद्वान तथा परहेज़गार उलेमाकराम का एक गिरोह पैदा कर रखा है, जिन्होंने अपने लगातार प्रयासों द्वारा इस्लामी अकाएद (आस्था) की बीखकुनी के लिए लगातार शैक्षिक, शोध तथा आमंत्रण का कार्य किया है। ऐसे ही पवित्र लोगों में इमामुद्दावह मुहम्मद बिन सुलेमान तैमीमी शख्सियत है कि जिन्होंने सारा जीवन शुद्ध दावती सर गरमियों को किताब सुन्नत की बुनियाद पर जारी रखा इस विषय में उनकी कुछ पत्रिकाएं भी अरबी भाषा में

प्रकाशित हुई हैं। जिनमें एक ''उसूलुस्सलासह व अदल्लतहा'' الاصـول الثـلاثـه وألتهـا है। जिसके महत्व को दृष्टिगत रखते हुए मकतबा अलफहीम ने उसका सरल उर्दू भाषा में अनुवाद ''इस्लाम क्या है?'' के नाम से प्रकाशित किया है। ये संक्षिप्त पत्रिका को यह कहा जाए कि संक्षिप्त होने के साथ-साथ इसका महत्व अध्यात्मि है।

यह पत्रिका अपने महत्व के साथ प्रमाणों सहित है। इस पत्रिका के आरम्भ में दीनी उसूल (अर्थात धार्मिक नियमों) पर चर्चा की गई है। कि मुसलमानों के कथन एवं कार्य के लिए सही जानकारी की आवश्यकता है जिसके परिचय के लिए तीन बुनियादी शिक्षा एवं समस्या को समझाना नितानत आवश्यक है।

इस सम्बन्ध मे सर्व प्रथम अल्लाह तआला की पहचान है। जिसके लिए आसमान से वह्य (अर्थात अल्लाह का संदेश) जैसी प्रमाणित ज्ञान द्वारा के अतिरिक्त अम्बिया व रसूल (ईश्वरीय दुत) भी इसकी व्याख्या हेतु मबऊस (औतरित) हुए। जिनमें अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० हैं। इनके बाद कोई नबी या रसूल इस संसार में आने वाला नहीं है। तथा आप सल्ल० के बादे नबी नबुव्वत का क्रम समाप्त हो गया है। जिन्होंने अल्लाह तआला के विषय में सभी प्रकार का प्रयास किया चाहे वह शैक्षिक स्तर का हो या अमली स्तर का हो। संसार से शिर्क (अल्लाह को छोड़कर अन्य देवी देवताओं, संतों सुफियों फकीरों से या पेड़ पौधों, पशुओं सर्पों, आदि से अपनी आवश्यकताओं हेतु प्रार्थतना करना) शिर्क है। ऐसा करने वाले को अल्लाह तआला कभी क्षमा नहीं करेगा तथा ऐसा कार्य करने वाला सदैव नरक के निचले तल में स्थानी काफिरों से भी निचले स्थान में जलता तथा भयंकर यातनाएं भोगता रहेगा वह जहन्नम से कभी नहीं

निकलेगा। बिदआत (ऐसा कार्य जिसका मज़हब में कोई सबूत या प्रमाण न हो उसे इबादत समझकर करना बिदअत कह लाता है) ऐसा करने वाला भी जहन्नमी होगा और हमेशा जहन्नम में जलता रहेगा। ये सभी अधर्मी कार्यों को समाप्त कर अल्लाह के नबी सल्ल० ने एक ईश्वर के उपासना का प्रसार किया तथा एकेश्वरवाद का प्रचम संसार मे बुलन्द किया आप सल्ल० के पवित्र जीवन में एकेश्वरवाद की लहर तेरह लाख वर्ग किलो मीटर में फैल गया तथा आप सल्ल० के पश्चात आप सल्ल० के सहाबा के शासन काल में अल्लाह का यह पैगाम ४५ लाख वर्ग किलो मिटर तक फैलगया। लगातार दीन के प्रचार व प्रसार में १४ शताब्दियों से "ताइफ मंसूरह" दीन के प्रचार व प्रसार एवं प्रकाशन द्वारा इस संदोश को विश्व के कोने कोने तक फैलाने में लीन रहा है।

"इस्लम क्या है?" में अल्लाह तआला की पहचान को प्राथमिकता प्राप्त है। अल्लाह की पहचान उसकी विशेषताओं के साथ यूं की जाए कि उसके किसी साझीदार को सम्मिलित न किया जाए, काफिर जैसे अपने देवी देवताओं के माध्यम द्वारा अल्लाहतक पहुच के लिए उनकी सिफारिश की कल्पना करते हैं। एक मुसलमान को इस उद्‌देश्य के लिए किसी व्यक्ति या प्राणी को माध्यम बनाने से बचना चाहिए। शिर्क से बचना एक मुसलमान के लिए वास्तविक सफलता है।

फिर दीन इस्लाम की मारफत है जिसके लिए हज़रत मुहम्मद सल्ल० की नुबुव्वत तथा रिसालत की मारफत नागुज़ीर है इस रिसाला में तीनों बुनियादी सच्चाईयों को समझने के लिए एक आसान, सादह तथा सरल शैली का प्रयोग किया गया है।

इस पत्रिका के अन्तिम भाग में नमाज़ की सही अदाएगी के विषय में नौ मूल बुनियादी समस्याओं की शर्तों की चर्चा करते हुए १४ अरकान नमाज़ का बयान है जिसे जानने के बाद नमाज़ की ज़ाहिरी हैयत के साथ उसका वास्तविक जौहर मकसूद भी हाथ आ जाता है। इस पुस्तक के अन्त में चार ऐसे नियम का वर्णन है जिनको समझे बिना न तो कोई मुसलमान हो सकात है न ही उसके ईमान के दावा को स्वीकार किया जा सकता है। इस्लामी आस्था इबादात (उपासना) की सही कल्पना को "मकतबा अलफहीम" ने स्पष्ट करने के लिए जो वहुमुल्य साहित्य उपलब्ध कराया है एवं बनाया है यह पत्रिका इस सम्बन्ध की एक उत्तम श्रिंखला है। इस संस्था की परम्प्रागत प्रकाशन रूची ने इस प्रयास को लाभदायक होने के अतिरिक्त आकर्षक भी बनया है। अल्लाह तआला इस परिश्रम एवं प्रयास को स्वीकृति प्रदान करे तथा मुस्लिम समाज के लिए लाब परद बनाए। आमीन

पो० अब्दुल जब्बार शाकिर

दीन (धर्म की मूल बातें)

दीन से सम्बन्धित चार बातें जिनका जानना अति आवश्यक है।

१. इल्म (ज्ञान) अल्लाह तआला (तथा उसकी विशेषताओं) की जानकारी, नबी सल्ल० का पवित्र जीवन की जानकारी, दीन के आदेशों, समस्याओं, प्रमाणों के साथ जानना।

२. धार्मिक आदेशों व समस्याओं पर अमल करना।

३. दीन का प्रचार प्रसार करना।

४. यदि धर्म के प्रचार में कोई परेशानी का सामना होतो उसपर संतोष करना।

अल्लाह तआला का फरमान (कथन) है।

وَالْعَصْرِ • إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ • إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ •

(العصر ١٠٣ : ١ . ٣)

अनुवादः "ज़माने की कसम! निःसन्देह मनुष्य घाटे में है सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए तथा उन्होंने नेक काम किये तथा एक दूसरे को हक (सच्चाई) का उपदेश दिया तथा एक दूसरे को संतोष की तलकीन (दीक्षा) दी।

इमाम शाफई रह० ने कहाः

यदि अल्लाह तआला अपनी मखलूक (प्राणी वर्ग) हेतु मात्र इस सूरह (अल अस्र) के अतिरिक्त कोई अन्य प्रमाण न भी उतारता तो मानव जाति की सफलता के लिए केवल यही सूरह अधिक थी।

इमाम बुखारी रह० सहीह हदीस में कहते हैं:

"اَلْعِلْمُ قَبْلَ الْقَوْلِ وَالْعَمَلِ"

"कथनी करने से पूर्व शिक्षा, ज्ञान आवश्यक है।"

इमाम साहब ने इस बात की दलील के लिए अलाह ताअला का यह आदेश नकल किया है।

فَاعْلَمْ اَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنبِک (محمد ۴۷:۱۹)

"पस ऐ नबी! आप जान लिजिए कि निःसन्देह अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा पुज्य नहीं है। कि अपने गुनाह (पाप) की क्षमा मांगे।

इस आयत को नकल करने के बाद इमाम साहब व्याख्या करते हैं कि इस आयत में अल्लाह तआला ने करने तथा कहने से पूर्व मारिफत की चर्चा की है। अतः हर एक मुसलमान पुरूष महिला को निम्न तीन समस्याओं की जानकारी भंली प्रकार होना चाहिए।

१. अल्लाह तआला की मारिफत (पहचान)।

२. दीन इस्लाम की जानकारी।

३. हज़रत मुहम्मद सल्ल० के विषय में जानकारी

पहला उसूल

अल्लाह तआला की मारफत (पहचान)

अल्लाह ने हमें पैदा किया फिर उसने बेलगाम ऊंट के समान हमें नहीं छोड़ा बल्कि हमारी रहनुमाई के लिए रसूलुल्लाह सल्ल० को नबी बनाकर भेजा अतः जिसने नबी सल्ल० की पैरवी की अनुपालन किया वह जन्नत में दाखिल होगा तथा रसूलुल्लाह सल्ल० की नाफरमानी की वह जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। अल्लाह तआला का फरमान है:

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولاً شَاهِداً عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَى فِرْعَوْنَ رَسُولاً • فَعَصَى فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذاً وَبِيلا
(المزمل: ۷۳، ۱۵. ۱۶)

अनुवादः "बेशक हमने तुम्हारी ओर एक रसूल भेजा जो तुम पर गवाह है। जैसे हमने फिरऔन की ओर रसूल भेजा था। अतः फिरऔन ने रसूल की नाफरमानी की तो हमने उसे सख्ती से पकड़ लिया।"

अल्लाह तआला को कदापि यह पसन्द नहीं कि उसकी इबादत उपासना किसी को सम्बन्धित किया जाए। चाहे वह फरिश्ता ही क्यों न हो या कोई रसूल। अल्लाह तअला का फरमान है:

وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَداً (الجن: ۷۲: ۱۸)

"और मस्जिदें अवश्य ही अल्लाह के लिए ही हैं। अतः अल्लाह के सिवा किसी को न पुकारो।"

जो व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्ल० की पैरवी तथा एक अल्लाह की

इबादत करता हो, इसे अवश्य ही यह शोभा नहीं देता कि वह ऐसें लोगों से दोस्ती या सम्बन्ध रखे जो अल्लाह तथा उसके रसूल का विरोध करते हों, चाहे उसके कितने ही निकटवर्ती क्यों न हों जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है कि :

لَا تَجِدُ قَوْماً يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِّنْهُ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ أُولَئِكَ حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (المجادله:٥٨:٢٢)

अनुवादः " ऐ नबी! आप (ऐसी) कोई कौम (जाति) नहीं पाएंगे जो अल्लाह तथा आखिरत (परलोक) के दीन पर ईमान रखता हो। कि वे उन (लोगों) से दोस्ती करे जो अल्लाह तथा उसके रसूल का विरोध करते हों अगर उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनका कुंबा (घराना) कबीला हो। यही वे लोग हैं कि अल्लाह ने उनके दिलों में ईमान लिख दिया है तथा उन्हें गुप्त रूप से लाभ से शक्ति प्रदान की। वह उन्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वे उन्में हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसें राज़ी हो गया तथा वे उससे राज़ी हो गए, यही लोग अल्लाह के गिरोह हैं। जान लो! बेशक (जो) अल्लाह का गिरोह है वही कामयाबी पाने वाला है।"

याद रहे (अल्लाह तआला हमें सीधी राह दिखाए) कि सीधा

रास्ता तथा दीन (धर्म) इब्राहिमी केवल यह है कि हम अल्लाह के लिए दीन को खालिस (शुद्ध) करते हुए एक ही अल्लाह की इबादत करें। अल्लाह तआला ने सभी को यही आदेश दिया है। तथा उनकी उत्पत्ती का उद्देश्य भी यही बयान किया है जैसा कि अल्लाह का इर्शाद (कथन) है।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ (الذّٰريٰت: ۵۱:۵٦)

"और मैंने जिन्नों तथा इंसानों को इसलिए पैदा किया कि वे मेरी ही इबादत (उपासना) करें।"

अल्लाह तौहीद (अद्वैत्वाद ईश्वर को एक मानना) के विषय में जो सबसे महत्व पूर्ण आदेश दिया है वह यह है कि अल्लाह ही की इबादत (उपासना, अराधना) की जाए तथा सबसे बुरा काम जिससे रोका गया है वह यह है कि अल्लाह जो अकेला है उसका कोई शरीक साझी नहीं उसका किसी (देवी देवता, पीर फकीर या संत को उसका साझी न बनाओ तथा उनको माध्यम बनाकर उनसे गुहार न करो।) अल्लाह तआला ने कहा है कि:

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا (النسآء ۴:۳٦)

"और तुम अल्लाह की इबादत करो उसका किसी को साझी न बनाओ।"

यदि आपसे यह प्रशन किया जाए कि वे कौन से तीन नियम हैं जिनका जानना हर एक मनुष्य के लिए आवश्यक है तो आप स्पष्ट कह देंगे कि हर एक मनुष्य को अपने रब, अपने धर्म तथा अपने नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० की पूर्ण जानकारी होना चाहिए।

यदि आपसे पूछा जाए कि "तुम्हारा रब कौन है?" तो आप कहें कि "मेरा रब अल्लाह है जिसने अपनी नेमतों से मुझे तथा सभी संसार वालों को प्रदान किया तथा क्रमवार उन्हें प्रगति की ओर बढ़ाया वही हमारा माबूद (पूज्य) है उसके अतिरिक्त किसी की भी पूजा नहीं की जा सकती।" अल्लाह का फरमायन है:

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ (الفاتحه: ١:١)

"सभी प्रशंसाएं मात्र अल्लाह के लिए हैं जो समूचे संसार का रब तथा पालनहार है।"

अर्थात अल्लाह के सिवाए हर एक वस्तु स्वयं में एक ऐसा संसार है तथा इन असंख्य संसार में से एक मैं भी हूं।

और जब आप से प्रश्न किया जाए कि "तुमने अपने रब को कैसे पहचाना?" तो आप कह दें कि अल्लाह तआला की मखलूकात (प्राणी वर्ग) तथा उसकी निशानियां रात, दिन, सूरज, चांद भी हैं। हमारे जन्म दाता व मालिक की असंख्य तखलीकात (उत्पत्ती) में सात ज़मीनें और सातो आसमान भी सम्मिलित हैं। इन ज़मीनों, आसमानों, अंतरिक्षों, हवाओं के बीच सभी मौजूदात, मखलूकात, सम्यानुसार पुकार पुकार अल्लाह की ज़ात सर्व श्रेष्ठता तथा उसकी महानता एवं किब्रियाई (श्रेष्ठता) की गवाही दे रही हैं। मैंने अपने रब को इन्हीं निशानियों से पहचाना। अल्लाह तआला का फरमान है कि:

وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ (حٰم السجدة ٣٧:٤١)

"और उसी अल्लाह की निशानियों में से रात व दिन तथा सूरज व चांद भी हैं तुम लोग न तो सूरज को सज्दा करो (मथा टेको) न चांद को। यदि तुम वास्तव में उसीकी इबादत उपासना करते हो तो तुम अल्लाह को सज्दा करो। (अर्थात उसके सामने माथा टेको) जिसने इन सब प्राणियों की उत्पत्ती की है।

आगे कहा:

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِیْ سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِیْ اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ تَبَارَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ (الأعراف:٧:٥٤)

"बेशक तुम्हारा रब वह अल्लाह है जिसने आसमानों तथा ज़मीनों को छः दिनों में पैदा किया फिर वह अर्श पर बैठ गया। वह दिन को रात से इस प्रकार ढांपता है कि वह (रात) जल्दी से उसे (दिन को) आलेती है तथा उसमें सूरज चांद तारे इस प्रकार बनाए कि वे सब (अल्लाह) के आदेशों के अधीन कर दिये गए हैं। सावधान रहो! उत्पत्ती करना तथा आदेश लागू करना उसी के लिए हैं। अल्लाह रब्बुल आलमीन बहुत बाबरकत है।

रब से अभिप्राय वह वास्तविक पुजय है जिसकी इबादत की जाए अल्लाह का कथन है:

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ • الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الأَرْضَ فِرَاشاً وَالسَّمَاء بِنَاءً وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقاً لَّكُمْ فَلاَ تَجْعَلُواْ لِلّهِ أَندَاداً وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ (البقره: ٢: ٢١، ٢٢)

"ऐ लोगो! तुम अपने रब की इबादत करो जिसने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को भी जो तुम से पहले थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ वह (रब) जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनया तथा आसमान को छत बनाया और उसने आसमान से पानी बरसाया फिर उसके ज़रिये से कई प्रकार के फलों से तुम्हारे लिए रोज़ी उत्पन्न की पस तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक न बनाओ। इस स्थिति में कि तुम जानते हो।"

इबादत के प्रकार

हर एक वह कार्य जो अल्लाह तआला ने करने का आदेश दिया है उस कार्य का करना इबादत (उपासना) है। जिसे इस्लमान, ईमान, एहसान, दुआ उम्मीद आशा, विश्वास, प्रेम, भय, खुशूअ (विनय) सहायता मांगना, शरण चाहना, फरियाद करना, ज़बह करना, भेंट मानाना आदि। ये सभी काम इबादत में सम्मिलित हैं। ये तथा इसके अतिरिक्त इबादत के अन्य प्रकार जिसके विषय में अल्लाह तआला ने आदेश दिया है कि वह सब अल्लाह तआला के लिए ही हों तो वह तौहीद (एक ईश्वर को मानना) के दायरे में होगी तथा जन्नत स्वर्ग का हकदार ठहराएगी। इसके विपरीत यदि उनमें से कोई भी काम अल्लाह को छोड़कर किया जाए तो वह शिर्क होगा तथा वह जहन्नम की सज़ा का पात्र होगा। अल्लाह ने फरमाया:

وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَداً (الجن: ١٨:٧٢)

"तथा मस्जिदें अवश्य ही अल्लाह के लिए हैं अतः अल्लाह के सिवा किसी को न पुकारो।"

उक्त में जिस व्यक्ति ने इबादात (उपासनाओं) में किसी प्रकार से अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए विशेष कर दिया वह मुशरिक तथा काफिर है।

अल्लाह का फरमान है।

وَمَن يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهاً آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِندَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ (المؤمنون: ٢٣:١١٧)

"तथा जो कोई अल्लाह के अतिरिक्त किसी माबूद (पूज्य) को पुकारे, जिसका उसके पास कोई प्रभाव नहीं तो अवश्य ही उसका हिसाब उसके रब के पास है। निःसन्देह काफिर सफल नहीं होंगे।"

हदीस में है:

"اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ" (جامع الترمذی، کتاب الدعوات باب منہ: الدعاء)

"दुआ इबादत का मूल है।

अल्लाह तआला ने फरमाया:

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ (المومن: ٤٠:٦٠)

"और तुम्हारे रब ने कहा है तुम मुझे पुकारो मैं तुम्हारी दुआऐं स्वीकार करूंगा निःसन्देह मेरी इबादत से सरकशी करते हैं वे शिघ्र ही रूस्वा तथा अपमानित होकर

जहन्नम में जाएंगे।"

अल्लाह तआला ही से डरने का प्रमाण, अल्लाह तआला ने फरमाया:

فَلا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ (آل عمران:۳:۱۷۵)

"पस तुम उन (काफिरों) से न डरो तथा मुझसे ही डरा करो यदि तुम मोमिन हो।"

अल्लाह तआला ही से आशा व उम्मीद रखने की दलील: अल्लाह का फरमायन:

فَمَن كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلاً صَالِحاً وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدا (الكهف:۱۸:۱۱۰)

"फिर जो व्यक्ति अपने रब से भेंट की आशा रखता हो तो चाहिए कि नेक अमल करे तथा अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे।"

अल्लाह पर भ्रोसा करने का प्रमाण: अल्लाह का फरमान:

وَعَلَى اللّهِ فَتَوَكَّلُواْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ (المائده ۵:۲۳)

"और यदि तुम मोमिन हो तो तुम्हें अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।"

तथा कहा:

وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ (الطلاق:۶۵:۳)

"और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करे तो वह (अल्लाह) उसके लिए अधिक है।"

अल्लाह तअला की ओर रूझान तथा उससे डरने की दलील, अल्लाह ने फरमाया :

إِنَّهُمْ كَانُوا يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَيَدْعُونَنَا رَغَباً وَرَهَباً وَكَانُوا لَنَا خَاشِعِينَ • (انبياء ۲۱ : ۹۰)

"बेशक वह (अम्बिया अलैहि०) नेकियों में जल्दी करते और हमें रगबत (रूची) तथा डर से पुकारते थे वे हमारे ही चाहने वाले थे।"

अल्लाह तआला से डरने का प्रमाण अल्लाह तआला ने फरमायाः

فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ (المائدة ۵ : ۳)

"पस तुम इन काफिरों से मत डरो।

अल्लाह तआला की ओर ही लौटने की दलीलः अल्लाह तआला का फरमान हैः

وَأَنِيبُوا إِلَى رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَه (الزمر ۳۹ : ۵۴)

"और तुम अपने रब की ओर लौटो तथा उसके आज्ञाकारी हो जाओ।

अल्लाह तआला से मदद तलब करने की दलील। अल्लाह ने कहाः

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ (الفاتحه ۱ : ۵)

"हम तेरी इबादत करते हैं तथा तुझ से मदद मांगते हैं।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः

"إِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللهِ" (جامع الترمذى)

जब तुम सहायता मांगो तो अल्लाह तआला ही से सहायता मांगो।

अल्लाह तआला से श्रण मांगने का प्रमाण, अल्लाह तआला ने फरमायाः

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ • مَلِكِ النَّاسِ (الناس: ۱۱۴ : ۱، ۲)

"कह दिजिए कि मैं मानव के रब की श्रण में आता हूं। इंसानोंके बादशाह की।"

अल्लाह तआला को गौस मानने की दलील, अल्लाह तआला का फरमान:

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ (الأنفال:٨:٩)

"याद करो जब तुम अपने रब से फरयाद कर रहे थे उसने तुम्हारे फरियाद को स्वीकार किया।"

कवेल अल्लाह के नाम पर ज़बह करने की दलील। अल्लाह तआला का फरमान:

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ • لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ • (الأنعام:٦:١٦٢، ١٦٣)

"कह दिजिए निःसन्देह मेरी नमाज़, मेरी कुरबानी, मेरी ज़िन्दगी, मेरी मौत (सब कुछ अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है। उसका कोई साझी नहीं तथा मुझे इसी बात अर्थात एकेश्वरवाद) का आदेश दिया गया है। तथा मैं सर्व प्रथम मुसलमान हूं।"

हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया:

"لَعَنَ اللّٰهُ مَنْ ذَبَحَ لِغَيْرِ اللّٰهِ" (صحيح مسلم)

"जो व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए बली चढ़ाए उस पर लानत धितकार है।"

भेंट का प्रमाण- अल्लाह तआला ने फरमाया:

يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْماً كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيراً (الدهر:٧٦:٧)

"वे अपनी मन्नत पूरी करते तथा उस दीन से डरते हैं, जिसकी आफत (चारी ओर) फैली होगी।"

दूसरा नियम

दीन (धर्म) इस्लाम की पहचान

इस्लाम धर्म को पहचानने के लिए प्रमाणों तथा दलीलों की आवश्यकता है बिना दलील तथा प्रमाण आप इस्लाम को भली भांति पहचान नहीं सकते। तौहीद (एक ईश्वर को) के द्वारा अल्लाह तआला के लिए सिर झुकाना, आज्ञापालन के माध्यम से उसका आज्ञाकारी होना तथा शिर्क (द्वेतवाद) से बचते हुए उसके साथ (निःस्वार्थता) व्यक्त करना धर्म (दीन) की पहचान के तीन नियम हैं।

१. इस्लाम २. ईमान ३. एहससान (उपकार)

इनमें हर एक मरातिर्ब के अरकान (स्तंभ) हैं।

इस्लामः

इस्लाम के पांच अरकान (स्तंभ) हैं।

१. गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पुज्य) नहीं तथा मुहम्मद सल्ल० उसके बन्दे और रसूल हैं।

२. नमाज़ कायम करना।

३. ज़कात (दान) देना।

४. बैतुल्लाह का हज करना।

५. रोज़ा रखना।

शहादत की दलील के विषय में अल्लाह तआला ने फरमायाः

شَهِدَ اللّٰهُ أَنَّهُ لا إِلَـهَ إِلَّا هُوَ وَالْمَلائِكَةُ وَأُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ لا إِلَـهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ • (آل عمران: ٣:١٨)

"अल्लाह ने गवाही दी है कि उसके अतिरिक्त कोई माबूद (पुज्य) नहीं। फरिशतों तथा शिक्षा विदों ने भी (गवाही दी है) क्योंकि वह न्याय के साथ कायम है। उसके सिवा कोई उपासना योग्य नहीं। वह हावी है तथा हिकमत वाला है।"

इस से अभिप्राय यह कि अल्लाह के सिवा कोई वास्तविक पुज्य उपासना योगय नहीं है। لَا إِلٰهَ الله रब्बुल इज्जत (महान सम्मान योग्य) के सिवा जिनकी पूजा की जाती है उन्हें नकारने वाला है तथा إِلَّا الله उसको सिद्ध करता है कि हर प्रकार की इबादत उपासना अल्लाह के लिए ही उचित है। वह अकेला है, जिस प्रकार उसका शासन चलाने में उसका कोई साझी नहीं ठीक उसी प्रकार उसकी इबादत उपासना में भी कोई साझी नहीं। उसकी व्याख्या स्वयं अल्लाह तआला ने की है कुरआन मजीद में इस प्रकार हैः

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاء مِّمَّا تَعْبُدُونَ • إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ • وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ • (الزخرف. ٤٣: ٢٦، ٢٨)

अनुवादः "और जब इब्राहीम ने अपने बाप तथा कौम (जाति) से कहा कि निःसन्देह मैं इन मूर्तियों से असंन्तुष्ट

हूं जिनकी तुम पूजा करते हो। सिवाय उस (अल्लाह) के जिसने मुझे जन्म दिया। तो निःसन्देह शिघ्र ही वह मेरा मार्ग दर्शन करेगा। तथा (इब्राहीम) अपनी सन्तान में (भी) इसी (कलमए तौहीद) अर्थात एकेश्वरवाद को शेष रहने वाला कलमा बना गए ताकि वे अल्लाह की ओर पल्टे।"

आगे कहा:

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْاْ إِلَى كَلَمَةٍ سَوَاء بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلاَّ نَعْبُدَ إِلاَّ اللّهَ وَلاَ نُشْرِكَ بِهِ شَيْئاً وَلاَ يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضاً أَرْبَاباً مِّن دُونِ اللّهِ فَإِن تَوَلَّوْاْ فَقُولُواْ اشْهَدُواْ بِأَنَّا مُسْلِمُون •

(آل عمران. ٣:٦٤)

"आप कह दीजिए ऐ अहले ईमान ऐसी बात की ओर आओ जो हमारे तुम्हारे बीच समान है। यह कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत उपासना न करें। तथा उसके साथ किसी को शरीक न करें। तथा हम में से कोई अल्लाह के सिवा किसी को रब न बनाए। फिर वह मुंह मोड़े तो तुम कह दो इस बात के गवाह रहो कि बेशक हम अल्लाह के फरमांबरदार (आज्ञाकारी) हैं।"

नबी सल्ल० की रिसालत का प्रमाणः फरमाने इलाही है।

لَقَدْ جَاءكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُوفٌ رَّحِيمٌ • (التوبه ٩ : ١٢٨)

(लोगो) अवश्य ही तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आ गया है इस पर तुम्हारा तकलीफ में पड़ना भारी रहता है,

वह तुम्हारी भलाई चाहता है मोमिनों (मुसलमानों) पर बहुत दयालू है तथा कृपा करने वाला है।"

इस बात की गवाही देना कि मुहम्मद सल्ल० अल्लाह तआला के रसूल (अवतार) हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि जिस कार्य का आप आदेश दें वह कार्य करना, जिस बात की सूचना दें उसकी तसदीक, (पुष्टि) करना, जिस बात से मना करें उससे रूक जाना, तथा आप सल्ल० के बताए हुए तरीके के अनुसार अल्लाह तआला की इबादत (उपासना) करना।

नमाज़कायम करने तथा ज़कात अदा करने की दलील

इस विषय में तौहीद (एकेश्वरवाद) की वज़ाहत व्याख्याः अल्लाह तआला का फरमानः

وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاء وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ وَذَلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ • (البينة٩٨ : ٥)

"हालांकि कि उन्हें यही हुक्म दिया गया था कि वे अल्लाह के लिए बन्दगी विशेष कर के यकसू होकर उसकी इबादत करें तथा वे नमाज़ पढ़ें एवं ज़कात (दान) दें, तथा यही सीधा धर्म हैं।

रमज़ान के रोज़ों का प्रमाणः

अल्लाह तआला ने कहा किः

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ • (البقره٢ : ١٨٣)

"ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो (अर्थात इस्लाम धर्म

स्वीकार किये हो) तुम पर रोज़ा (व्रत) उसी प्रकार अनिवार्य किया गया है जिस प्रकार उन लोगों पर अनिवार्य किया गया था जो तुम से पहले थे ताकि तुम नेक बन जाओ।"

बैतुल्लाह के हज का प्रमाणः

अल्लाह का फरमानः

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلاً وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ اللهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ • (آل عمران ٣:٩٧)

"और अल्लाह तआला ने उन लोगों पर हज अनिवार्य किया है हो इस यात्रा की शक्ति रखते हैं। तथा जिसने नकारा तो निःसन्देह अल्लाह तआला समूचे संसार से बेपर्वा है।"

ईमानः

ईमान की सत्तर से अधिक शाखाएं हैं सबसे श्रेष्ठ तथा उच्च भाग لاَ إِلٰهَ إِلاَّ اللّٰه लाइला-ह इल्लल्लाह का इकरार स्वीकृति तथा सबसे कम स्तर का मार्ग से रूकावट को हटाना दूर करना है। हया (लाज) भी ईमान आस्था का ही एक महत्व पूर्ण भाग है।

ईमान के छे स्तंभ हैं:

१. अल्लाह तथा उसके रसूलों उसके फरिशतों पर उसके द्वारा आकाशीय उतारी गयी पुस्तकों पर तथा कयामत (परलय) के दिन पर तथा भाग्य के अच्छे या बुरे होने पर ईमान लाना है।

सर्व प्रथम पांच स्तंभों का प्रमाणः

अल्लाह तआला ने फरमायाः

لَّيسَ الْبِرَّ أَن تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَـكِنَّ الْبِـرَّ مَـنْ آمَـنَ بِـاللّـهِ وَالْيَـوْمِ الآخِرِ وَالْمَلآئِكَةِ وَالْكِتَـابِ وَالنَّبِيِّينَ (البقره ٢:١٧٧)

(इसका नाम) "नेकी नहीं कि तुम अपना मुंह पूरब या पश्चिम की ओर कर लो बल्कि नेकी तो उस व्यक्ति की है जो अल्लाह पर आखिरत (परलय) के दिन पर, फरिश्तों पर, (आकाशीय) आसमानी पुस्तकों पर तथा नबियों (अल्लाह के द्वारा भेजे गये अवतारों) पर ईमान लाए।"

तकदीर (भाग्य) पर ईमान लाने की दलीलः

अल्लाह का फरमान (आदेश)

انَّا كُلَّ شَیْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَر ۝ (القمر ۵۴:۴۹)

"निः सन्देह हमने हर एक वस्तु एक निश्चित अंदाज़ के अनुसार पैदा की है।"

एहसान (उपकार) :

एहसान का एक स्तंभ है। वह यह कि (जैसे नबी सल्ल० ने आदेश दिया) तुम अल्लाह की इबादत इस प्रकार से करो कि जैसे तुम उसे देख रहे हो। यदि तुम उसे नहीं देख रहे हो तो वह तुम्हें अवश्य ही देख रहा है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْ اوَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ۝

(النحل ١٦:١٢٨)

"निःसन्देह अल्लाह तआला परहेज़गारी ग्रहण करने वालों तथा उपकार करने वालों के साथ है।" आगे आदेश हैः

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ • الَّذِىْ يَرٰكَ حِيْنَ تَقُوْمُ • وَتَقَلُّبَكَ فِى السّٰجِدِيْنَ • اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ •

(الشعرا ۲٦:۲۱۷۔۲۲۰)

"और आप (अल्लाह) शक्तिशाली (तथा) दायालू पर भरोसा रखें। जो आपको देखता है। जब आप एकान्त में नमाज़ में खड़े होते हैं तथा सज्दा (माथा टेकते) करने वालों के साथ आपका उठना बैठना (भी) देखता है। निःसन्देह अल्लाह देखने तथा सुनने वाला है

आगे फरमायाः

وَمَا تَكُوْنُ فِىْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ •

(يونس ۱۰:٦۱)

"और ऐ नबी! आप जिस दशा में भी होते हैं तथा अल्लाह की ओर से उतारे गये कुरआन में से जो कुछ भी पढ़ते हैं तथा तुम लोग जो भी अमल करते हो उस समय हम तुम्हें देख रहे होते हैं। जब तुम उसमें व्यस्त होते हो।"

एहसान से सम्बन्धित हदीस जिब्रील बहुत प्रसिद्ध है। जिसका ज़िक्र हज़रत उमर खत्ताब रज़ि० द्वारा किया गया है।

بَيْنَمَا نَحْنُ جُلُوْسٌ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ، إِذْ طَلَعَ عَلَيْنَا رَجُلٌ شَدِيْدُ بَيَاضِ الثِّيَابِ، شَدِيْدُ سَوَادِ الشَّعْرِ، لَا يُرٰى عَلَيْهِ أَثَرُ السَّفَرِ، وَلَا يَعْرِفُهٗ مِنَّا أَحَدٌ، حَتّٰى جَلَسَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَأَسْنَدَ رُكْبَتَيْهِ إِلٰى رُكْبَتَيْهِ، وَوَضَعَ كَفَّيْهِ عَلٰى فَخِذَيْهِ، وَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ!

أَخْبِرْنِي عَنِ الْإِسْلَامِ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : اَلْإِسْلَامُ أَنْ تَشْهَدَ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا ﷺ رَسُوْلُ اللّٰهِ، وَ تُقِيْمَ الصَّلَاةَ وَ تُؤْتِيَ الزَّكَاةَ، وَ تَصُوْمَ رَمَضَانَ، وَ تَحُجَّ الْبَيْتَ إِنِ اسْتَطَعْتَ إِلَيْهِ سَبِيْلًا قَالَ: صَدَقْتَ فَعَجِبْنَا لَهُ يَسْأَلُهُ وَ يُصَدِّقُهُ، قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنِ الْإِيْمَانِ؟ قَالَ: أَنْ تُؤْمِنَ بِاللّٰهِ وَ مَلَائِكَتِهِ، وَ كُتُبِهِ، وَ رُسُلِهِ، وَالْيَوْمِ الْآخِرِ، وَ تُؤْمِنَ بِالْقَدْرِ خَيْرِهِ وَ شَرِّهِ قَالَ: صَدَقْتَ، قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنِ الْإِحْسَانِ؟ قَالَ: أَنْ تَعْبُدَ اللّٰهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ، فَإِنْ لَّمْ تَكُنْ تَرَاهُ، فَإِنَّهُ يَرَاكَ قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنِ السَّاعَةِ؟ قَالَ: مَا الْمَسْئُوْلُ عَنْهَا بِأَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنْ أَمَارَتِهَا؟ قَالَ: أَنْ تَلِدَ الْأَمَةُ رَبَّتَهَا، وَ أَنْ تَرَى الْحُفَاةَ الْعُرَاةَ الْعَالَةَ، رِعَاءَ الشَّاءِ، يَتَطَاوَلُوْنَ فِي الْبُنْيَانِ، قَالَ: ثُمَّ انْطَلَقَ، فَلَبِثْتُ مَلِيًّا، ثُمَّ قَالَ لِيْ: يَا عُمَرُ! أَتَدْرِيْ مَنِ السَّائِلُ؟ قُلْتُ اَللّٰهُ وَ رَسُوْلُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: فَإِنَّهُ جِبْرِيْلُ، أَتَاكُمْ يُعَلِّمُكُمْ دِيْنَكُمْ (صحیح بخاری، الایمان باب سؤل جبریل النبی ﷺ ..... حدیث ٥٠، و صحیح مسلم الایمان،باب بیان الایمان والاسلام و الا حاسان.، حدیث :٨

''हम नबी सल्ल० के पास बैठे हुए थे कि अचानक एक व्यक्ति हमारे पास आया, उसके कपड़े बिल्कुल सफेद तथा बाल बहुत काले थे। उसपर सफर का प्रभाव भी नहीं था। हम में से कोई उसे जानता भी नहीं था, वह नबी सल्ल० के पास बैठ गया। उसने अपना घुटना आप सल्ल० के घुटने के सामने रखा तथा अपना हाथ आप सल्ल० की रानों पर रखा, तथा कहा कि ऐ मुहम्मद सल्ल० मुझे इस्लाम के विषय में बताएं। रसूलुल्लाह सल्ल० ने कहा। ''इस्लाम यह है कि तू गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पुज्य) नहीं है। तथा

हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ कायम करें, ज़कात (दान) अदा करें, रमज़ान के रोज़े रखें, तथा यदि क्षमता हो तो बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) का हज करें। उस सवाली ने कहा कि आप सच कहते हैं। हमें आश्चर्य हुआ कि वह स्वयं ही आप सल्ल० से प्रश्न करता है तथा उसकी पुष्टि करता है। फिर उसने कहा कि मुझे ईमान के विषय में बताएं। नबी सल्ल० ने कहा (ईमान यह है) कि अल्लाह पर, उसके फरिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, कयामत के दिन पर (परलय के दिन पर) भाग्य के अच्छा या बुरा होने पर ईमान लाए। (आस्था रखे) इस प्रश्न करने वाले ने कहा, आप सल्ल० सच कहते हैं। फिर उसने कहा मुझे एहसान (उपकार) के विषय में बताएं। नबी सल्ल० ने कहा, एहसान यह है कि अल्लाह तआला की इबादत (उपासना) इस प्रकार करे जैसे तु उसे देख रहा है, यदि तू उसे नहीं देख रहा है तो वह तुझे अवश्य देख रहा है। फिर उसने प्रश्न किया कि कयामत (परलय) के विषय में बताएं। तो नबी सल्ल० ने कहा "जिससे प्रश्न किया गया है वह भी प्रश्न करने वाले से अधिक नहीं जानता फिर उसने प्रश्न किया "क़यामत की निशानियां बताएं। आप सल्ल० ने कहा (उसकी निशानियां यह हैं) लौंडी अपना आका चुनेगी ताथा देखो गे कि नंगे पांव, नंगे शरीर वाले, भिखारी तरह के लोग तथा बकरियों के चरवाहे अपनी ऊंची ऊंची इमारतों, भवनों पर गर्व करेंगे।" हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि फिर व अजनबी प्रश्न कर्ता तो चला गया तथा मैं (आश्चर्य चकित बना) कुछ देर बैठा रहा फिर नबी सल्ल० ने फरमाया। ऐ उमर! तुम्हें मालूम है कि वह सवाल करने वाला कौन था? मैंने कहा, अल्लाह तथा उसके रसूल अधिक जानते हैं। आप सल्ल० ने कहा वह जिब्रईल अलैहि० थे। तुम्हें तुम्हारे दीन (धर्म) के नियम सिखाने आये थे।"

तीसरा नियम

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का परिचय

आप सल्ल० का नाम तथा वंशः

मुहम्मद सल्ल० बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम है। हाशिम वंश का सम्बन्ध कुरैश वंश से था। कुरैश अरब क्षेत्र की प्रसिद्ध कबीला है अरब हज़रत इस्माईल बिन हज़रत इब्राहीम की संतान हैं। उन पर तथा हमारे नबी सल्ल० अफज़ल दुरूद सलाम हो।

नबी सल्ल० की उम्र ६३ वर्ष थी। रिसालत से ४० वर्ष पूर्व तथा २३ वर्ष नुबुव्वनत का जीवन है। आप सल्ल० सुरह अलक (की प्रथम वह्य) से नुनव्वत मिली तथा सूरह मुदस्सिर (की दूसरी वह्य) नुबव्वत के पद पर फाइज़ (पदासीन) किये गए। अल्लाह तआला ने आप सल्ल० को शिर्क (मूर्तियों की पूजा) से बचाने तथा तौहीद (अर्थात एक अल्लाह की उपासना) की ओर बुलाने के लिए मबऊस (नबी बनाया गया) अल्लाह तआला ने फरमायाः

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ • قُمْ فَأَنذِرْ • وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ • (المدثر ٧٤:١-٥)

"ऐ लिहाफ में लिपटने वाले! उठिये तथा डराइये तथा अपने रब की बड़ाई बयान कीजिए अपने वस्त्रों को पवित्र

रखिए। तथा अपवित्रता छोड़ दीजिए।

قُـمْ فَـاَنْذِرْ का अर्थ है कि शिर्क (मूर्ती पूजा) से डराओ (आगाह करो) तथा एकेश्वरवाद की ओर बुलाओ وَرَبَّکَ فَـکَبِّرْ अर्थात तौहीद (एक अल्लाह) के माध्यम से अपने रब की महान्ता एवं श्रेष्ठता का ज़िक्र करो।

وَثِيَـابَکَ فَطَهِّـرْ अर्थात अपने अमलों को शिर्क (मूर्ती पूजा) से बचाओ। وَالرُّجْزَفَاهْجُرْ का अर्थ मूर्ती (बुत) तथा فاهجر का अर्थ है कि उस मूर्ती को तथा उसके पूजने वालों को छोड़ दें। उससे बे ज़ारी उपेक्षा को व्यक्त करें।

आप सल्ल० ने इस तौहीद अर्थात एक अल्लाह के प्रचार प्रसार पर १० वर्ष व्यय किये। तथा १० वर्ष के पश्चात आप सल्ल० को मेअराज आसमानी कराई गई। वहां पर आप सल्ल० पर पांच नमाज़ें फर्ज़ हुई। तीन वर्ष मक्का में नमाज़ें पढ़ीं इसके बाद हिजरत अर्थात मक्का छोड़ने का आदेश हुआ तो आप सल्ल० मदीना चले गये।

हिजरत का अर्थ होता है कि जिस क्षेत्र देवी देवताओं मूर्तीयों की पूजा की जाती है उस क्षेत्र को छोड़ उस क्षेत्र में चले जाना जहां इस्लामी कार्यों तथा इस्लाम सम्बन्धि नियमों के पालन में कोई रूकावट न हो हिजरत कहलाता है। मुसलमानों के समुदाय पर ये फर्ज़ है कि वह शिर्क वाले क्षेत्र को छोड़कर तौहीद वाले क्षेत्र में चले जाएं। यह अनिवार्यता कयामत तक के लिए है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

إِنَّ الَّـذِيْـنَ تَـوَفَّاهُمُ الْمَلآئِكَةُ ظَالِمِىْ اَنْفُسِهِمْ قَالُوا فِيْمَ كُنتُمْ
قَـالُـوا كُـنَّـا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِيْ الأَرْضِ قَالُوَا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ
وَاسِـعَةً فَتُهَـاجِـرُوا فِيْهَـا فَـاُوْلَـئِكَ مَاوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَسَاءَتْ
مَصِيْراً• إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا
يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلاً• فَـاُوْلَـئِكَ عَسَى اللّٰهُ
اَنْ يَعْفُوَ عَنْهُمْ وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوّاً غَفُوراً• (النسآء ۴:۹۷.۹۹)

अनुवादः "निःसन्देह जिन लोगों की इस स्थिति में फरिश्ते जान निकालते हैं (वह जान बुझ कर काफिरों में रहकर) अपने जानों पर अत्याचार करते हैं तो फरिश्ते पूछते हैं कि तुम किस हाल में थे? वे कहते हैं, हम धर्ती पर कमज़ोर थे तब फरिश्ते कहते हैं कि अल्लाह तआला की ज़मीन वसीअ चौड़ी लम्बी नहीं थी कि तुम छोड़कर चले जाते? अतः यही लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है। तथा वह बहुत बुरा ठिकाना है.। किन्तु वे पुरूष तथा महिलाओं तथा बच्चे जो वास्तव मे विवश एवं मजबूर हों, तथा उस स्थान से निकलने का कोई साधन एवं माध्यम तथा कोई रास्ता नहीं पाते उन लोगों के विषय में उम्मीद एवं आशा है कि अल्लाह तआला उन्हें माफ कर देगा। तथा अल्लाह तआला बड़ा क्षमा करने वाला एवं बख्शने वाला है। आगे कहाः

يَا عِبَادِيَ الَّذِيْنَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَإِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ •
(العنكبوت ٢٩: ٥٦)

"ऐ मेरे बन्दो! जो ईमान लाए हो, निःसन्देह मेरी ज़मीन लम्बी चौड़ी है, अतः तुम मेरी ही इबादत (उपासना) करो।"

इमाम बगवरी रह० कहते हैं कि यह आयत उन मुसलमानों के विषय में है जो मक्का में थे तथा उन्होंने अभी हिजरत (अर्थात मक्का छोड़कर नहीं गये थे) नहीं की थी। अल्लाह तआला ने उन्हें भी ईमान वाला कहकर पुकारा है। रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः

"لَاتَنْقَطِعُ الْهِجْرَةُ حَتّٰى تَنْقَطِعَ التَّوْبَةُ، وَلَا تَنْقَطِعُ التَّوْبَةُ حَتّٰى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَّغْرِبِهَا" (سنن أبی داؤد، الجهاد)

"जब तक तौबा स्वीकार होती रहे गी हिजरत का क्रम समाप्त

नहीं होगा। तथा जब तक सूरज पश्चिम से नहीं निकलता तौबा स्वीकार होती रहेगी।"

जब नबी सल्ल० मदीना में ठहरे तो शरीअत के शेष आदेश पर अमल करने का आदेश दिया। जैसे ज़कात, रोज़ा, हज, अज़ान, जिहाद, नेकी का हुक्म देना बुराई से रोकना, इसके अतिरिक्त अन्य धार्मिक आदेश आप सल्ल० ने शरअी अदेश के लागू करने तथा प्रचार प्रसार के लिए गैर मुनकतअ न रूकने वाला क्रम लगातार १० वर्षों तक बे मिसाल परिश्रम तथा प्रयासों के द्वारा किया। अन्ततः आप सल्ल० ने दीन (अर्थात इस्लाम धर्म) के पूर्ण होने का शुभ संदेश देकर ६३ वर्ष की उम्र में अल्लाह तआला की ओर से पैगामी अजल पर लब्बैक कहते हुए इस फना होने वाले संसार को त्यागा तथा हमेशा हमेश रहने वाले स्थान की ओर प्रस्थान किया।

नबी सल्ल० इस नश्वर संसार से तो चले गए मगर आप द्वारा लाया गया दीन (धर्म) शेष है। इस्लाम यह एक ऐसा दीन मज़हम तथा धर्म है जिसकी रोशनी में आप सल्ल० ने उम्मत (समुदाय) को भलाई के हर एक काम से परिचय तथा जानकारी दी तथा हर एक प्रकार से बुराईयों के विषय में बताकर उससे बचने की ताकीद की।

भलाई जिसकी आप सल्ल० ने निशान्देही की वह तौहीद (तथा एक अल्लाह की इबादत उपासना करना) तथा सभी कार्य हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने पसन्द किया है। तथा बुराई जिससे आप सल्ल० ने आगाह किया वह शिर्क (शिर्क उसे कहते हैं कि अल्लाह को छोड़कर मूर्ती पूजा, देवी देवता, पीर फकीर, संत या अन्य मरे लोगों में आस्था रखकर उनकी उपासना करना तथा उनसे अपनी मुरादों की प्राप्ती हेतु गुहार लगाना यही शिर्क है तथा ऐसा करने वाला हमेशा जहन्नम में रहेगा) तथा सभी काम हैं जो अल्लाह तआला को ना पसन्द हैं जिनके करने से मना किया गया है अल्लाह तआला ने आप सल्ल० को तमाम इंसानों के लिए नबी बनाकर भेजा, आप सल्ल० की आज्ञाओं की पालन सभी मानव जाति एवं जिन्नों पर अनिवार्य

घाषित किया है। अल्लाह तआला ने आप सल्ल० को यह घोषणा करने का आदेश दिया:

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّى رَسُولُ اللّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيْعاً

(الأعراف ٧:١٥٨)

"कह दीजिए ऐ लोगो! निःसन्देह मैं तुम सबकी ओर अल्लाह का रसूल हूं।"

और अल्लाह तआला ने दीन (इस्लाम धर्म को) मुकम्मल कर दिया जैसा कि कहा गया।

الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِى وَرَضِيْتُ لَكُمُ الإِسْلَامَ دِيْناً (المآئده ٥:٣)

"आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (धर्म) पूर्ण कर दिया तथा तुम पर अपनी नेमत (अनुकंपा) पूरी कर दी। तथा तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म के रूप में पसन्द कर लिया।

नबी सल्ल० की वफात (मृत्यू) का प्रमाण अल्लाह के आदेशानुसार।

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُم مَّيِّتُونَ • ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ • (الزمر ٣٩:٣٠.٣١)

"ऐ नबी! निः सन्दहे आप भी मरने वाले हैं तथा वे भी अवश्य मरने वाले हैं फिर निःसन्देह तुम कयामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे।"

मरने के बाद पुनः जीवित होने का प्रमाणः

अल्लाह तआला ने फरमाया:

مِنۡهَا خَلَقۡنَاكُمۡ وَفِيۡهَا نُعِيۡدُكُمۡ وَمِنۡهَا نُخۡرِجُكُمۡ تَارَةً أُخۡرَى •

(طٰه • ٢٠:٥٥)

"हमने तुम्हें इसी मिटटी से पैदा किया, तथा इसी ज़मीन में तुम्हें लौटाएंगे, तथा इसी में से तुम्हें एक बार फिर निकालेंगे।"

आगे कहा:

وَاللّٰهُ أَنۡبَتَكُمۡ مِّنَ الۡأَرۡضِ نَبَاتاً • ثُمَّ يُعِيۡدُكُمۡ فِيۡهَا وَيُخۡرِجُكُمۡ إِخۡرَاجاً • (نوح ٧١:١٧.١٨)

"तथा अल्लाह ही ने तुम्हें ज़मीन से (विशेष अन्दाज़ से) उगाया। और वह तुम्हें इसमें लौटाएगा। तथा फिर तुम्हें (दो बारा) निकालेगा।"

दो बारा ज़िन्दा होने के बाद उनका हिसाब होगा तथा उनके अमल के अनुसार बदला दिया जाएगा। तथा सज़ा होगी। अल्लाह तआला ने कहा:

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الۡأَرۡضِ لِيَجۡزِيَ الَّذِيۡنَ أَسَاؤُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجۡزِيَ الَّذِيۡنَ أَحۡسَنُوا بِالۡحُسۡنَى •

(النجم ٥٣:٣١)

"और अल्लाह ही के लिए है जो कुछ ज़मीनों तथा आसमानों में है ताकि वह उन लोगों को जिन्होंने बुरे काम किये उनके कार्यों की सज़ा दे, तथा उन लोगों को जिन्होंने अच्छाईयों की (उन्हें) अच्छा बदला दे।

जिस व्यक्ति ने मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने को नकारा झुठलाया उसने कुफ्र (अधर्म) किया।

अल्लाह तआला ने कहाः

زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا أَن لَّن يُبْعَثُوا قُلْ بَلَى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ (التغابن ۶۴:۷)

"काफिरों ने दावा किया कि उन्हें (कब्रों से) हरगिज़ नहीं उठाया जागा। (ऐ नबी!) कह दीजिएः क्यों नहीं? मेरे रब की कसम! तुम्हें ज़रूर उठाया जागा, फिर तुम्हें ज़रूर बताया जाएगा जो तुमने अमल किये और यह अल्लाह पर बिल्कुल आसान है।"

अल्लाह ने तमाम अम्बिया को खुशखबरी देने और डराने वाला बनाकर भेजा।

अल्लाह तआला ने कहाः

رُسُلاً مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزاً حَكِيْماً (النسآء ۴:۱۶۵)

"खुशखबरी देने वाले और डराने वाले रसूल भेजे ताकि रसूलों के बाद लोगों के लिए अल्लाह को इल्ज़ाम देने की कोई गुंजाइश न रहे। और अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त और बड़ी हिकमत वाला है।

पहले नबी नूह अलैहि० और आखिरी नबी मुहम्मद सल्ल० हैं। और आप अन्तिम नबी हैं।

अल्लाह तआला ने फरमायाः

إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوْحٍ وَالنَّبِيِّيْنَ مِنْ بَعْدِهِ (النسآء ۴:۱۶۳)

"(ऐ नबी!) बेशक हमने आपकी तरफ वह्य की जैसे हमने नूह और उनके बाद दूसरे नबियों की वह्य की।"

अल्लाह तआला ने नूह अलैहि०से लेकर मुहम्मद सल्ल० तक हर उम्मत में एक रसूल भेजा। वह उन्हें एक अल्लाह की इबादत करने का हुक्म देते थे और तागूत की इबादत से मना करते थे।

अल्लाह तआना ने फरमाया:

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِىْ كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولاً أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوت (النحل ١٦:٣٦)

"तथा हमने हर उम्मत (समुदाय) में एक रसूल भेजा, कि अल्लाह की इबादत करो तथा मूर्तियों की पूजा करने से बचो।"

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर अनिवार्य किया है कि वे बुतों की पूजा से बचें एवं उनकी उपासना को नकार दें तथा अल्लाह पर ईमान लाएं। इमाम इब्ने कैयम रह० कहते हैं कि तागूत का अर्थ यह है कि बन्दा अपनी सीमा से बढ़ जाए चाहे वह पूज्य के रूप में हो या उसके मतबूअ व मुताअ के रूप में हो वैसे तो ताबूत अत्याधिक है किन्तू बड़े निम्न पांच हैं।

१. इबलीस मलऊन।

२. वह व्यक्ति जो अपनी इबादत करवाकर प्रसन्न होता है।

३. जो लोगों को अपनी पूजा करने को कहता है।

४. जो यह दावा करता है कि मैं गुप्त बातों को जानता हूं।

५. वह व्यक्ति जो अल्लाह तआला की उतारी हुई शरीअत के अतिरिक्त किसी और से निर्णय करता है। अल्लाह तआला फरमाता है:

لاَ إِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ قَد تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَىِّ فَمَنْ يَكْفُرْ

بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِن بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى لَا انفِصَامَ لَهَا وَاللّٰهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ٥ (البقره ٢: ٢٥٦)

"दीन (धर्म मज़हब) में कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं। हिदायत गुमराही से स्पष्ट हो चुकी है। फिर जो व्यक्ति तागूत का इंकार करे तथा अल्लाह पर ईमान ले आये तो अवश्य ही उसने एक मज़बूत कड़ा थाम लिया है। जो टूटने वाला नहीं, तथा अल्लह खूब सन्ने वाला और जानने वाला है।"

यही माना तथा भाव एवं अर्थ لَا إِلٰـهَ إِلَّاالله का है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं रसूलुलुल्लह सल्ल० ने फरमायाः

"رَأْسُ الْأَمْرِ الْإِسْلَامُ،وَعَمُودُهُ الصَّلَاةُ،وَذِرْوَةُ سَنَامِهِ الْجِهَادُ"

(جامع الترمذی الایمان)

(सभी) कामों को मूल इस्लाम है। इसका सुतून (खम्बा) नमाज़ है, उसकी कौहान की चोटी (श्रेष्ठ कार्य) जीहाद है।

नमाज़ की शर्तें:

१. इस्लाम।
२. वजू।
३ नमाज़ का समय होना।
४. अकल (बुद्धि)।
५. तहारत (पवित्रता)।
६. किबला रू होना (काबा की ओर मुंह करना)।
७. शुऊर (बुद्धि)।
८. सुत्र ढांपना (गुप्तांगों को छिपाना)।
९. नियत करना।

१. इस्लामः

नमाज़ की शर्तों में प्रथम शर्त इस्लाम है। इसका विपरीत कुफ्र है। काफिर का हर अमल मरदूद तथा अस्वीकार्य योग्य है। चाहे वह जैसा भी अमल करे। अल्लाह का आदेश है।

مَـا كَـانَ لِـلْـمُشْرِكِيْنَ أَن يَعْمُرُواْ مَسَاجِدَ الله شَاهِدِيْنَ عَلَى أَنفُسِهِـمْ بِـالْـكُـفْـرِ أُوْلَـئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِيْ النَّارِ هُمْ خَالِدُون • (التوبة ٩:١٧)

"मुशरिकीन (वे लोग जो अल्लाह को छोड़कर अन्य लोगों की पूजा करते हैं तथा किसी को अल्लाह का साझी मानकर उनसे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु गुहार करते हैं उन्हें मुशरिक कहा जाता है। ऐसे लोगों के गुनाहों की माफी नहीं तथा वे हमेशा जहन्नम में रहेंगे।) इस योग्य नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें। जबकि वे अपने आप पर कुफ्र की गवाही दे रहे हों। इन्हीं लोगों के सब आमाल बरबाद हो गये वे हमेशा जहन्नम में रहेंगे।"

अल्लाह तआला ने और फरमायाः

وَقَدِمْنَا إِلَى مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَّنثُوراً

(الفرقان ٢٥:٢٣)

"और उन्होंने (जो देखने में नेक) अमल किये होंगे हम उनकी ओर आकर्षित होकर उनको उड़ता हुआ परगन्दा गुबार बना देंगे।"

२. अकल (बुद्धि):

दूसरी शर्त बुद्धि है। इसकी ज़िद विपरित पागल पन है जब तक

किसी पागल का पागलपन समाप्त न हो जाएगा उसके किसी अमल की पकड़, प्रतिकार नहीं होगा। वह मरफूउल कलम (पागल) है क्योंकि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया:

رُفِعَ الْقَلَمُ عَنْ ثَلاثَةٍ: عَنِ النَّائِمِ حَتَّى يَسْتَيْقِظَ ، وَ عَنِ الْغُلامِ حَتَّى يَحْتَلِمَ وَ عَنِ الْمَجْنُونِ حَتَّى يُفِيْقَ (صحيح البخارى الطلاق)

"तीन प्रकार के लोग पागल हैं, उनके अमल हिसाब किताब के लिए नहीं लिखे जाते।

१. सोया हुआ व्यक्ति यहां तक कि जाग न जाए।

२. छोटा बच्चा यहां तक कि वह बालिग हो जाए।

३. मजनू (पागल) यहां तक कि वह ठीक हो जाए।

३. बुद्धि:

उसका विपरीत बचपना है तथा उसकी सीमा सात वर्ष है। इसके बाद नबी सल्ल० के आदेशानुसार उसे नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया जाएगा। रसूलुल्लाह सल्ल० ने आदेश दियाः

مُرُوْا أَبْنَآءَ كُمْ با لصَّلاَةِ لِسَبْعِ سِنِيْنَ وَاضْرِبُوهُمْ عَلَيْهَا لِعَشْرِ سِنِيْنَ وَ فَرِّقُوْا بَيْنَهُمْ فِى الْمَضَاجِعِ (مسند احمد: ١٨٧/٢)

"जब बच्चे सात वर्ष के हो जाएं तो उन्हें नमाज़ पढ़ने का आदेश दो तथा यदि वे १० वर्ष की आयु में नमाज़ न पढ़ें तो उन्हें सज़ा दो, तथा इस उम्र में उन्हें अलग अलग सुलाओ।

४. वजू:

जब वजू टूट जाए तो वजू करना अनिवार्य है। वजू की १० शर्तें हैं- १. इस्लाम, २. अक्ल, ३. चेतना शुऊर, ४. रेह, ५. पेशाव,

६. मज़ी आदि का निकलना, ७. पेशान से फारिग होना, ८. पानी का शुद्ध होना, ६. पानी का मुबाह होना, १०. शरीर तक पानी पहुंचना में जो रूकावट हो दूर करना।

वज़ू के छः फारएज़ हैं कर्तव्य हैं।

१. चेहरे का धोना २. कुल्ली करना, ३. नाक में पानी चढ़ाना ४. लम्बाई के अनुसार चेहरा सिर के बालों से लेकर ठोढ़ी है तथा चौड़ाई के अनुसार कानों तक है ५. हाथों को कोहनियों तक धोना ६. समूचे सिर का मसह करना अर्थात बालों पर पानी के साथ पिछले गर्दन तक फेरना दोनों कान भी सिर में सम्मिलित हैं। टखनों तक पांव धोना। शरीर के जितने अंग हैं जिसे बताया गया है शरई हिसाब से धोना। सभी अंगों को बिना रूके धोना। अल्लाह तआला का आदेश है।

يَـا أَيُّهَـا الَّذِيْنَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْـدِيَـكُـمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُؤُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ (المائده:٥:٦)

"ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने चेहरे एवं कोहनियों तक अपने हाथ धोलो तथा अपने सिरों का मसह करो अर्थात हाथों में पानी लगाकर सिर पर फेरो तथा अपने पांव टखनों तक धो लो।" क्रम के बारे में नबी सल्ल० का आदेश है।

اِبْدَأُوا بِمَا بَدَأَ اللّٰه بِهٖ" (سنن الدار قطنی حدیث: ۲۵۵۴)

"जहां से अल्लाह ने आरम्भ किया तुम भी वहीं से आरम्भ करो।"

१. लगातार वज़ू करने के विषय में एक हदीस है।

أَنَّ النَّبِیَّ ﷺ رَأٰی رَجُلاً یُّصَلِّی وَ فِی ظَهْرِ قَدَمِهٖ لُمْعَةٌ قَدْرَ الدِّرْهَمِ لَمْ یُصِبْهَا الْمَاءُ فَأَمَرَهُ النَّبِیُّ ﷺ أَنْ یُّعِیْدَ الْوُضُوْءَ وَالصَّلٰاةَ

(سنن ابی داود حدیث:۱۷۵)

"नबी करीम सल्ल० ने एक व्यक्ति को नमाज़ पढ़ते देखा कि उसके पांव में दिरहम बराबर सूखा है जहां पानी नहीं पहुंचा था। आप सल्ल० ने उसे दो बारा वुजू करने तथा नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया।"

वजू को بِسْمِ اللّٰه पढ़कर शुरू करना अनिवार्य है।

वजू टूटने के कारण आठ हैं। १. दोनों गुप्तांगो से किसी चीज़ का खारिज होना। २. शरीर द्वारा किसी ऐसी वस्तु का निकलना जो अपवित्र हो। ३. बुद्धि भ्रष्ट हो जाए। ४. नारी को सहवास से प्रेरित होकर छूना। ५. गुप्तांगों को हाथ से छूना। ६. ऊंट का गोश्त खाना। ७. मैयत को गुस्ल देना। ८. मुर्तद हो जाना (अर्थात इस्लाम धर्म स्वीकार करने के पश्चात नकार देना। अल्लाह तआला ऐसी बद बखती से बचाए)

५. तहारत (पवित्रता):

तीन चीज़ें जिस्म, लिबास, तथा वह ज़मीन से जहां नमाज़ पढ़ना अपवित्र गन्दी वस्तुओं को दूर करना अर्थात ये तीनों वस्तुएं शुद्ध साफ एवं पत्रि होना चाहिए। अल्लाह तआला ने फरमाया:

وَثِیَابَکَ فَطَهِّرْ ۝ (المدثر ۷۴:۴)

"तथा अपने कपड़ों को पाक रखिए।"

६. सतर:

अर्थात शर्मगाह (गुप्तांग को ढांपना) विद्वानों की इसपर सहमति

है। जो व्यक्ति क्षमता होने की अपेक्षा नंगा होर नमाज़ पढ़े उसकी नमाज़ व्यर्थ है। पुरूष तथा दासी का सुत्र (वस्त्र) नाफ से लेकर घुटनों तक है। तथा स्वतंत्र महिला का चेहरे के सिवा समूचा शरीर सुत्र है। अर्थात वह चेहरे के अतिरिक्त सारा शरीर ढांपेगी। अल्लाह का ओदश है:

يَا بَنِىٓ آدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ (الاعراف:۷:۳۱)

"ऐ बनी आदम! तुम हर नमाज़ के समय अपना बनाओ सिंघार करो।" हर नमाज़ के समय।

७. नमाज़ का वक्त होना:

नमाज़ का समय होना सुन्नत से सिद्ध है कि जिब्राईल अलैहि० ने प्रथम समय में तथा अन्तिम समय में नबी सल्ल० की इमामत कराई

يَا مُحَمَّدُ! هٰذَا وَقْتُ الْأَنْبِيَاءِ مِنْ قَبْلِكَ وَالْوَقْتُ مَا بَيْنَ هٰذَيْنِ الْوَقْتَيْنِ (سنن ابی داود حدیث:۳۹۳)

"ऐ मुहम्मद (सल्ल०) यह आपसे पहले अम्बिया (की नमाज़ों) का समय है तथा (आपकी नमाज़ों का) मुस्तहब वक्त (भी) इन समयों के बीच है।"

अल्लाह तआला का आदेश है:

إِنَّ الصَّلاَةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَاباً مَّوْقُوتاً ۰ (النسآء ۴:۱۰۳)

"बेशक मोमिनों पर निश्चित समय पर नमाज़ फर्ज़ (अनिवार्य)है।

नमाज़ों का समय अल्लाह के फरमान से सिद्ध है।

أَقِمِ الصَّلاَةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلَى غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ

إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا • (بنی اسرآئیل ۱۷:۷۸)

"सूरज के ढलने से लेकर रात के अंधेरे तक नमाज़ कायम कीजिए। तथा नमाज़ फज्र भी, बेशक फज्र की नमाज़ (फरिश्तों) हाज़िर होने का समय है।

८. किबला रू होनाः

अर्थात (काबा की ओर रूख करना) फरमाने इलाही है।

قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ (البقره: ۲:۱۴۴)

"हम आपके चेहरे का बार बार आसमान की उठना देख रहे हैं। तो हम अवश्य ही आपको उसकी किबले की ओर फेर देंगे जिसे आप पसन्द करते हैं। फिर आप अपना मुंह मस्जिदे हराम की ओर फेर लें तथा जहां कहीं भी तुम हो अपना रूख उसकी ओर फेर लो।"

६. नियत करनाः

नियत का स्थान हृदय है। नियत का ज़बान से शब्दों के साथ अदा करना बिदअत (अधार्मिक) है। नबी सल्ल० का फरमान है।

إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ، وَ إِنَّمَا لِكُلِّ امْرِىءٍ مَّا نَوٰى (صحیح البخاری: حدیث: ۱)

"अमलों का दारो मदार नियतों पर है तथा हर एक व्यक्ति के लिए वही कुछ है जिसकी वह नियत करता है।

अरकाने नमाज़ (नमाज़ के स्तंभ):

अरकाने नमाज़ चौदह हैं।

१. शक्ति के होते हुए कयाम करना।

२. तकबीर तहरीमा।

३. सूरह फातिहा पढ़ना।

४. रूकूअ करना।

५. रूकूअ से उठना।

६. सात अंगों पर सज्दा करना।

७. एतेदाल (संतुलन)।

८. दोनों सजदों के बीच बैठना।

९. सभी अरकान शान्ति पूर्वक अदा करना।

१०. तरतीब (क्रमवार)

११. आख़िरी तशहहुद (अन्तिम बार बैठना)।

१२. तशहहुद में बैठना।

१३. नबी सल्ल० पर दुरूद भेजना।

१४. दोनों ओर सलाम फेरना।

सभी (चौदह) अरकानों (स्तंभों के विषय में प्रमाण निम्न हैं)

शक्ति के होते हुए खड़े होना:

अल्लाह का आदेश:

حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ والصَّلاَةِ الْوُسْطَى وَقُومُوا لِلّهِ قَانِتِينَ •

(البقره:٢:٢٣٨)

"तुम सभी नमाज़ों तथा विशेष रूप से बीच वाली

नमाज़ की रक्षा करो। तथा अल्लाह के सामने आजज़ी करने वाले बनकर खड़े हो।"

तकबीर तहरीमा:

नबी सल्ल० ने फरमाया:

تَحْرِيْمُهَا التَّكْبِيْرُ، وَ تَحْلِيْلُهَا التَّسْلِيْمُ (سنن ابی داود : ٦١)

"उस (नमाज़) की तहरीम (आगाज़) तकबीर (अल्लहुअकबर कहना) तथा उसकी तहलील (समाप्ती) तसलीम अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि कहना है।

यानी नमाज़ तकबीर तहरीम से शुरू होती है तथा सलाम फेरने से समाप्त होती है इसके बाद सनाअ पढ़ते हैं जिसके वाक्य निम्न हैं।

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ! وَ بِحَمْدِكَ وَ تَبَارَكَ اسْمُكَ وَ تَعَالٰى جَدُّكَ وَ لَا إِلٰهَ غَيْرُكَ (سنن ابی داود :٧٧٦ و ترمذی: ٢٤٢)

"ऐ अल्लाह! तू अपनी हम्द (प्रशंसा) के साथ पाक है। तथा तेरा नाम बहुत बा बरकत है तेरी शान बुलन्द है तथा तेरे सिवा कोई पुज्य नहीं।

ऐ अल्लाह मैं तेरी पवित्रता का वर्णन करता हूं जो तेरी शान के योग्य है। سُبْحَانَكَ اللّٰهُم

और तेरी तारीफ करते हुए। وَ بِحَمْدِكَ

और तेरा नाम बड़ा बा बरकत है। وَ تَبَارَكَ اسْمُكَ

और तेरी शान बहुत बुलन्द है। وَ تَعَالٰى جَدُّكَ

और (ऐ अल्लाह! ज़मीन तथा आसमान में) तेरे सिवा कोई पुज्य नहीं है। وَ لَا إِلٰهَ غَيْرُكَ

इसके बाद पढ़ें:

أَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ •

मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह लेता हूं।

أَعُوْذُ का अर्थ है ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूं।

مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْم शैतान जो अल्लाह की रहमत से दूर किया जा चुका है।

वह मुझे दीन दुनिया में किसी तरह नुकसान न पहुंचाए।

सूरह फातिहा पढ़नाः

हर रेकअत में सूरह फातिहा पढ़ना रूकन है। जैसा कि हदीस में है कि नबी सल्ल० ने फरमायाः

لاَ صَلاَةَ لِمَنْ لَّمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَاب

(صحیح بخاری: ۷۵٦، وصحیح مسلم: ۳۹۴)

"जो व्यक्ति सूरह फातिहा नहीं पढ़ता उसकी नमाज़ नहीं होती।"

चूंकि सूरह फातिहा उम्मुल किताब है अतः इसे पढ़े बिना नमाज़ नहीं होती।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ •

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बहुत कृपालू एवं दयावान है।

यह बरकत की प्राप्ती तथा सहायता के लिए पढ़ी जाती है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ • सभी प्रशंसाएं अल्लाह तआला के लिए हैं जो सारे संसार का पालनहार है।

इस आयत में حمد, हम्द का अर्थ प्रशंसा के है तथा हम्द के

साथ अलिफ लाम इस्तिगराक (तलीनता, लिप्ता, निमग्नता) के लिये है अर्थात हर प्रकार की तारीफ व प्रशंसा।

رب العالمين रब का अर्थ है, पुज्य जन्म दाता रोज़ी देने वाला, मालिक काल के उलट फेर का मालिक, सभी प्रकार के प्राणियों को नेमतें प्रदान करने वाला, आलमीन- आलम का बहुवचन है। अल्लाह तअला के सिवा जो कुछ भी है उनमें से हर एक वस्तु या हर एक व्यक्ति एक संसार है तथा हर एक का रब है।

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ • जो बहुत मेहरबान अति दयालू है।

सभी प्राणियों हेतु सामान्य दयालू।

الرحيم मोमिनों हेतु विशेष रहमत इलाही है।

फरमाले इलाही है:

وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْماً • (الاحزاب:٣٣:٤٣)

और अल्लाह मोमिनों पर दया रहम करने वाला है।

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ •

जो बदले तथा सज़ा व हिसाब के दिन का मालिक है।

जिस दिन हर एक व्यक्ति को उसके द्वारा किये गये कामों के अनुसार बदला दिया जाएगा। यदि उसका काम अच्छा होगा तो बदला भी अच्छा होगा यदि उसका काम बुरा होगा तो सज़ा भी भयंकर होगी उसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह आदेश है।

وَمَـا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ • ثُـمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ •
يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئاً وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ •

(الانفطار:٨٢:١٧:١٩)

"और आपको क्या खबर कि बदले का दिन क्या है?

फिर आपको क्या खबर कि बदले का दिन क्या है? उस दिन कोई व्यक्ति किसी के लिए कुछ भी अधिकार नहीं रखेगा। उस दिन केवल अल्लाह का हुक्म होगा।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया है:

اَلْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ، وَ عَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ، وَالْعَاجِزُ مَنْ اَتْبَعَ نَفْسَهُ هَوَاهَا ، وَتَمَنّى عَلَى اللّٰهِ (جامع ترمذی؛ ۲۴۵۹)

''बुद्धिमान वह व्यक्ति है जिसे अपने नफ्स (इच्छाओं) कंटरोल कर लिया तथा मौत के बाद वाला जीवन के लिए अमल किया। तथा आजिज़ वह व्यक्ति है जिसमें अपनी इच्छाओं तथा ख्वहिशों के पीछे लगा लिया तथा अल्लाह तआला से अनावश्यक आशाएं लगा रखी है।

हम तेरी ही इबादत उपासना करते हैं। اِيَّاكَ نَعْبُدُ

बन्दे तथा उसके रब के बीच जो अहद प्रतिज्ञा है वह यही है कि उस के सिवा किसी की इबादत पूजा न की जाए।

और हम केवल तुझसे मदद मांगते हैं। وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ

यहां बन्दे तथा उसके रब के बीच यह अहद प्रतिज्ञा है कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य से सहायता न मांगी जाए।

हमें सीधा मार्ग का मार्गदर्शन करा। اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ

اِهْدِنَا का अभिप्राय है हमारा मार्गदर्शन कर तथा स्थिर कायम रख।

صِرَاطَ इस के कई अर्थ किये गये हैं जैसे इस्लाम, रसूल सल्ल० तथा कुरआन मजीद ये सभी अर्थ सही तथा दुरूस्त हैं।

اَلْمُسْتَقِيْمَ सीधा जिसमें कोई टेढ़ा पन न हो।

صراط الذین انعمت علیهم

उन लोगों की राह जिन पर (ऐ अल्लाह) तूने इनाम किया

अल्लाह का फरमायन है।

وَمَن يُطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُولَ فَأُولٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِم مِّنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولٰئِكَ رَفِيقًا • (النساء ٤:٦٩)

"और जो कोई अल्लाह तथा उसके रसूल की अज्ञाओं का पालन करे तो वह ऐसे लोगों के साथ होंगे जिनपर अल्लाह ने इनाम किया यानी अंबिया, सिद्दीकीन, तथा शहीदों एवं नेक लोगों के साथ तथा ये लोग अच्छे साथी होंगे।

غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ न उनका रास्ता जिनपर गज़ब हुआ।

उनसे अभिप्रया यहूदी हैं, जिन्होंने जानते हुए अमल नहीं किया। हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि वह हमें उनके तौर तरीकों से सुरक्षित रखे।

وَلَا الضَّالِّينَ न उनका रास्ता जो भटकने वाले हैं।

इनसे अभिप्राय नसारा (ईसाई) हैं वह जिहालत तथा गुमराही की बुनियाद पर अल्लाह की इबादत करते थे। हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि वह हमें उनके तरीकों से बचाए।

الضَّالِّينَ अर्थात गुमराही के विषय में अल्लाह का फरमान है।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُم بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا • الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا •

(الكهف:١٨:١٠٣-١٠٤)

"कह दीजिए (यदि तुम कहो तो) हम तुम्हें बताएं कि अमलों (कर्यों) में सबसे अधिक घाटे में कौन हैं? जिनका प्रयास सांसारिक

जीवन में व्यर्थ गया। जब कि वे समझते हैं कि अवश्य ही वे अच्छे कार्य कर रहे हैं।'' इस विषय में रसूलुल्लाह सल्ल० की हदीस है:

لَتَتَّبِعُنَّ سَنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ شِبْرًا شِبْرًا، وَ ذِرَاعًا ذِرَاعًا، حَتَّى لَوْ دَخَلُوا جُحْرَ ضَبٍّ تَبِعْتُمُوهُمْ قُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! اَلْيَهُوْدُ وَالنَّصَارٰى؟ قَالَ: فَمَنْ؟(صحيح البخارى)

''तुम अपने से (पहले उम्मतों) का अवश्य ही पालन करोगे यहां तक कि यदि वे सांडे के बिल में घुस जाएं तो तुम भी उसमें घुस जाओगे (सहाबा कहते हैं कि) हमने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० क्या पहले के लोगों से अभिप्राय यहूदी तथा ईसाई हैं? आप सल्ल० ने कहाः (यदि वे नहीं) तो फिर और कौन हैं? एक अन्य हदीस में है:

اِفْتَرَقَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى إِحْدٰى وَ سَبْعِيْنَ فِرْقَةً. فَوَاحِدَةٌ فِيْ الْجَنَّةِ، وَ سَبْعُوْنَ فِيْ النَّارِ. وَافْتَرَقَتِ النَّصَارٰى عَلٰى ثِنْتَيْنِ وَ سَبْعِيْنَ فِرْقَةً، فَإِحْدٰى وَ سَبْعُوْنَ فِيْ النَّارِ، وَوَاحِدَةٌ فِيْ الْجَنَّةِ. وَالَّذِيْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ! لَتَفْتَرِقَنَّ أُمَّتِيْ عَلٰى ثَلَاثٍ وَ سَبْعِيْنَ فِرْقَةً، وَاحِدَةٌ فِيْ الْجَنَّةِ وَ ثِنْتَانِ وَ سَبْعُوْنَ فِيْ النَّارِ قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! مَنْ هُمْ؟ قَالَ: (اَلْجَمَاعَةُ)(ابن ماجه)

''यहूदी ७१ गिरहों में बटे हुए हैं (उन में से) केवलन एक गिरोह ही जन्नत में जाएगा तथा ७० जहन्नमी हैं। ईसाई ७२ गिरहों में बटे हुए हैं उनमें से ७१ जन्नमी हैं तथा एक जन्नती है। कसम उस हस्ती की जिसके हाथ में मुहम्मद सल्ल० की जान है मेरी उम्मत (अनुयाई) अवश्य ही ७३ समुदाय में बटी होगी इन एक समुदाए जन्नत में जाएगा तथा बहत्तर जहन्नम में जाएंगे। पूछा गया अल्लाह के रसूल सल्ल० वे कौन लोग हैं? कहा, जमाअत।

रूकूअ व सज्दा करनाः

रूकूअ करना सात अंगों पर तथा सात अंगों पर सज्दा करना।

एतेदाल तथा दो सज्दों के बीच बैठना इन सबके विषय में अल्लाह तआला का फरमान है।

يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدو (الحج:٢٢:٧٧)

"ऐ ईमान वालो! रूकूअ करो तथा सज्दा करो।"

इस विषय में रसूलुल्लाह सल्ल० का फरमान है:

أُمِرْتُ أَنْ أَسْجُدَ عَلٰى سَبعَةِ أَعْظُمٍ (صحيح البخاری:٨١٢)

"मुझे सात हड्डियों पर सज्दा करने का हुक्म दिया गया है।

सभी कामों में शान्ति तथा अरकान क्रमवार के विषय में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से वर्णित है:

أَنَّ رُسُولَ اللّٰهِ ﷺ دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَدَخَلَ رَجُلٌ فَصَلّٰى فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَرَدَّ، فَقَالَ: ((اِرْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّکَ لَمْ تُصَلِّ،)) فَرَجَعَ فَصَلّٰى كَمَا صَلّٰى، ثُمَّ جآءَ فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((اِرْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّکَ لَمْ تُصَلِّ)) ، ثَلاثًا، فَقَالَ: وَالَّذِیْ بَعَثَکَ بِالْحَقِّ! مَا أُحْسِنُ غَيْرَهُ، فَعَلِّمْنِیْ، فَقَالَ: ((إِذَا قُمْتَ إِلَى الصَّلَاةِ فَكَبِّرْ، ثُمَّ اقْرَأْ مَا تَيَسَّرَ مَعَکَ مِنَ الْقُرْآنِ، ثُمَّ ارْكَعْ حَتّٰى تَطْمَئِنَّ رَاكِعًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتّٰى تَعْتَدِلَ قَائِمًا، ثُمَّ اسْجُدْ حَتّٰى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتّٰى تَطْمَئِنَّ جَالِسًا، وَافْعَلْ ذٰلِکَ فِیْ صَلَاتِکَ كُلِّهَا)) (صحيح البخاری:٧٥٧، وصحيح مسلم:٣٩٧)

"एक बार रसूलुल्लाह सल्ल० मस्जिद में तशरीफ लाए इतने में एक व्यक्ति आया तथा उसने नमाज़ पढ़ी फिर नबी सल्ल० को सलाम किया, आप सल्ल० ने जवाब देने के बाद कहा "जा ओ नमाज़ पढ़ो, तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी फिर इस प्रकार तीन बार हुआ, अन्ततः उसने कहा, कसम अल्लाह की, जिसने आप सल्ल० को हक के साथ भेजा है। मैं इससे अच्छी नमाज़ नहीं पढ़ सकता। आप सल्ल० मुझसे

सिखा दीजिए। आप सल्ल० ने कहा "अच्छा जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तो तकबीर कहो फिर कुरआन से जो तुम्हें याद हो पढ़ो। उसके बाद इतमिनान से रूकूअ करो फिर सज्दा करो। फिर सिर उठाओ ओर सीधे खड़े हो जाओ फिर सज्दा करो तथा सज्दे में इतमिनान से रहो फिर सिर उठाकर इतमिनान से बैठ जाओ और अपनी पूरी नमाज़ इस प्रकार मुकम्मल करो।

अन्तिम तशहहुद (नमाज़ों में अन्तिम बैठक):

नमाज़ में आखिरी तशह्हुद (अन्तिम बैठक) भी अति महत्व पूर्ण है जैसा कि हज़रत मसऊद रज़ि० बयान करते हैं जब हम पर तशह्हुद अनिवार्य (फर्ज़) नहीं हुआ था तो हम इस प्रकार कहा करते थे। "अस्सलामु अलल्लाहि मिन इबादेहि"

اَلسَّلَامُ عَلَى اللّٰهِ مِنْ عِبَادِهٖ ((اَلسَّلَامُ عَلٰى جِبْرِيْلَ وَ مِيْكَائِيْلَ))

अल्लाह पर उसके बन्दे की ओर से सलामती हो, जिब्रईल तथा मिकाईल अलैहि० पर सलामती हो। नबी सल्ल० ने फरमायाः

((لَا تَقُوْلُوْا: اَلسَّلَامُ عَلَى اللّٰهِ فَإِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّلَامُ ، وَ لٰكِنْ قُوْلُوْا:))

"यूं न कहा करो कि अल्लाह पर (उसके उसके बन्दों की ओर से) सलामती हो क्योंकि अल्लाह तो खुद सलामती वाला है। तुम यह कहा करो:

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهُ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ ، اَشْهَدُ اَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ ، وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ(صحيح البخارى)

"सभी प्रकार की इबादतें उपासनाएं, कथनी, करनी, माली, अल्लाह के लिए ही हैं। ऐ नबी! आप पर सलाम हो तथा अल्लाह रहमत (कृपा) तथा बरकात (बढ़ोत्तरी) हो। हम पर तथा अल्लाह के नेक बन्दों पर सलाम हो, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई

माबूद (पूज्य) नहीं। मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्ल० उसके बन्दे तथा रसूल हैं।

التحيات का अर्थ है हर एक प्रकार का सम्मान सत्कार आदर अल्लाह तआला ही के लिए है तथा वह उसी का हक अधिकार है। रूकूअ व सज्दा बका व वदावम (अस्तित्व, दृणता, निरन्तरता) एवं हर एक प्रकार ही महानता एवं बड़कपन अल्लाह तआला ही के शायाने शान है। जिसने इसमें से किसी वस्तु को अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए विशेष किया तो वह मुश्रिक एवं काफिर (अर्थात अल्लाह को नकारने वाला) है।

الصلوات सभी प्रकार की दुआऐं तथा कुछ लोगों ने इनसे अभिप्राय पांच नमाज़ं भी ली हैं।

الطيبات अल्लाह स्वयं ही तैयब तथा पवित्र हैं तथा वह केवल पवित्र कथन तथा कार्य ही स्वीकार करता है।

اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ اَيُّهَا النَّبِیُّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهُ

नबी सल्ल० के लिए सलामती, रहमत तथा बरकत की दुआ की जाती है। याद रहे कि जिसके लिए दुआ की जाती है उसे अल्लाह के साथ नहीं पुकारा जा सकता।

السلام عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ

इस दुआ के माध्यम से मनुष्य अपने लिए तथा आकाश एवं धर्ती हर एक नेक व्यक्ति के लिए दुआ करता है। السلام से अभि प्राय दुआ है। صالحين कहकर नेक तथा सालेह लोगों के लिए दुआ की जाती है। अतः दुआ करते समय अल्लाह के साथ उन्हें भी शरीक नहीं करना चाहिए।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللَّهُ

इस शहादत के कारण मनुष्य विश्वास एवं आस्था ईमान के साथ गवाही देता है कि ज़मीन आसमान में इबादत उपासना के योग्य मात्र एक हस्ती बरहक सत्य है तथा वह अल्लाह ही है। तथा यह गवाही देता है कि मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं, उन्हें झुठलाया न जाए बल्कि उनकी आज्ञाओं का पालन किया जाए। अल्लाह तआला ने उन्हें रिसालत की प्रतिष्ठा एवं सम्मान तथा बन्दगी से नवाज़ा है फरमाने इलाही:

تَبَارَكَ الَّذِىْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِيْنَ نَذِيْراً •
(الفرقان: ۲۵: ۱)

"वह हस्ती बड़ी ही बा बरकत है जिसने अपने बन्दे पर कुरआन उतारा ताकि वह संसार के लोगों को डराने वाला बने।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ ، كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ　(صحيح البخارى: ۳۳۷۰)

इलाही! मुहम्मद सल्ल० पर तथा उनकी सन्तान पर रहमतें नाज़िल फरमा और आले इब्राहीम अलैहि० पर रहमतें (कृपा) किया निः सन्देह तू प्रशंसा किया हुआ महान सम्मान वाला है।

इलाही! मुहम्मद सल्ल० पर तथा उनकी सन्तान पर बरकतें नाज़िल उतार कर जैसा तूने इब्राहीम अलैहि० पर तथा इब्राहीम की

संतानों पर बरकतें उतारी थीं। निःसन्देह तू प्रशंसा किया हुआ महानतम शान वाला है।

الصلاة من الله अल्लाह की ओर से सलात से अभिप्राय यह है कि वह फरिश्तों के पास अपने बन्दे की प्रशंसा करता है, जैसे सहीह बुखारी में है। अबू आलिया से वर्णित है सलातुल्लाह से अभिप्राय यह है कि वह फरिश्तों के पास अपने बन्दों की प्रशंसा करता है। कुछ ने सलात صلاة से अभिप्राय "रहमत" (अनुकंपा) है किन्तु सही बात प्रथम ही है। यदि यह सलात صلاة फरिश्तों की ओर से हो तो इससे अभिप्राय "इस्गिफार" استغفار (क्षमा याचना) है। यदि मनुष्य की ओर से हो तो फिर इससे अभिप्राय दुआ है।

दरूद शरीफ के बाद वाली दुआएं मांगना सुन्नत (पद्धति, नियम) है।

चार नियम

मैं अल्लाह करीम रब्बे अज़ीम से दुआ करता हूं कि वह दुनिया तथा आखिरत (अर्थात लोक परलोक) में तुम्हारा पक्षधर तथा सहायता कार हो। तुम जहां कहीं भी हो तुम्हें सम्पन्नता का साधन बनाए तथा तुम्हें ऐसे व्यक्तियों में शामिल करे कि जब उन्हें कोई नेमत (अनुकंपा, स्वादिष्ट पदार्थ) प्रदान की जाए तो वे आभार (शुक्र) व्यक्त करते हैं। जब कोई आज़माइश आती है तो सब्र (संतोष) करते हैं। तथा जब कोई गलती एवं पाप होता है तो क्षमा याचना करते हैं। ये तीनों विशेषताएं शुक्र (आभार) सब्र (संतोष) (इस्तिगफार) क्षमा याचना आज्ञाकारयिों के लक्षण हैं।

अल्लाह तआला तुम्हें रूश्द हिदायत से नवाज़े कि तौहीद, मिल्लत (धर्म) है इब्राहीमी का शेआर है। यह ज़रूरी है कि तुम खालिस अल्लाह की इबादत के ख्याल से उस एक अल्लाह की इबादत करो जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है:

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ • (الذّريٰت: ٥١:٥٦)

"और मैंने जिन्नों तथा इंसानों को इसी लिए पैदा किया है कि वे मरी ही इबादत करें।"

जब तुमने यह वास्तविकता जान लिया कि अल्लाह तआला ने

तुम्हें अपनी इबादत के लिए पैदा किया है तो यह बात मन में बैठा लो कि तौहीद (एक अल्लाह) के बिना कोई इबादत इबादत नहीं है। जैसे पाकी के बिना नमाज़ नहीं। जब नमाज़ में शिर्क की गन्दगी शामिल हो तो इबादत रद हो जाएगी जैसे पाखाना करने से पाकी समाप्त हो जाती है।

जब तुम पर यह हकीकत स्पष्ट हो गई कि जूंही इबादत के शिर्क की गनदगी शमिल होती है इबादत फासिद (अशुद्ध) हो जाती है। इस प्रकार सारे आमाल बरबाद हो जाते हैं तथा मुश्रिक हमेशा के लिए जहन्नमी बन जाता है अतः यह आवश्यक है कि तुम्हें इबादत की ठीक ठीक मालूमात होनी चाहिए। मुमकिन है कि अल्लाह तआला तुम्हें शैतान के फैलाए हुए सबसे खतरनाक जाल से बचाले। जिससे मुराद अल्लाह तआला के साथ शिर्क करना है। अल्लाह तआला फरमाते हैं।

إِنَّ اللّٰهَ لاَ يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذٰلِكَ لِمَن يَشَاء

(النسآء:٤:١١٦)

"निःसन्देह अल्लाह ये पाप गुनाह कभी नहीं माफ करेगा कि उसके साथ शिर्क (उसका साझी) किया जाए। वह इसके अतिरिक्त जिसे चाहे माफ कर सकता है।

और इन चार नियमों के जानने से तो अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में बयान किये हैं। शिर्क के जाल से बचा बचा सकता है।

१. प्रथम नियमः

यह मालूम होना चाहिए कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने जिन कुफ्फार

से जिहाद किया वे भी इस बात को स्वीकार करते थे, जन्मदात, रोज़ी देने वाला सब कुछ करने वाला अल्लाह तआला ही है। किन्तु इसके बावजूद वे इस्लाम में उनकी जोड़ती नहीं की गई। अल्लाह तआला ने कहाः

قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالأَبْصَارَ وَمَن يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيَّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَن يُدَبِّرُ الأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللّهُ فَقُلْ أَفَلاَ تَتَّقُونَ ۝

(يونس: ١٠ : ٣١)

"ऐ नबी सल्ल०! कह दीजिए तुम्हें आसमान तथा ज़मीन से कौन रोज़ी देता है तथा कानों, आंखों का मालिक कौन है। तथा कौन ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है तथा मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है तथा कौन (दुनिया के) कामों की व्यवस्था करता है? तो वे काफिर अवश्य कहेंगे अल्लाह! तो कह दीजिए क्या फिर तुम (अल्लाह से) डरते नहीं।

२. दूसरा नियमः

ये जो कहते थे कि हम जो उन्हें पुकारते हैं तो हमारा ये कार्य उनसे निकटता प्राप्त करना तथा सिफारिश हेतु है निकटता के विषय में उनकी इस दलील की चर्चा अल्लाह तआला ने इस आयत में की है।

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاء مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى

اللّٰهِ زُلْفَى إِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ • (الزمر: ۳۹:۳)

"और जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर काम बनाने वाले बना रखे हैं (वे कहत हैं) हम उनकी पूजा इसलिए करते हैं कि वे हमें अल्लाह तआला से अधिक निकट कर देंगे। अवश्य ही अल्लाह तआला उनके बीच इन बातों का फैसला कर देगा। जिनमें वह विरोध करते हैं। निःसन्देह अल्लाह उन्हें हिदायत (मार्ग दर्शन) नहीं देगा ज़ो झूठ तथा ना शुक्रा (अकृतज्ञ) हो।"

शफाअत तथा सिफारिश का प्रमाणः

अल्लाह तआला ने फरमायाः

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللّٰهِ (يونس: ۱۰:۱۸)

"वे अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ों की पूजा करते हैं जो उन्हें न नुकसान देती है न नफा देती है। तथा वे कहते हैं कि ये अल्लाह के यहां हमारे लिए सिफारिश करते हैं।"

शफाअत (सिफारशि) दो प्रकार की हैः

१. ऐसी सिफारिश जिसकी मनाही की गई है।

२. ऐसी सिफारिश जो साबित है।

मना की गई सिफारिश से मुराद वह सिफारिश है जो अल्लाह को छोड़कर किसी अन्य देवी देवता मूर्ती पीर फकीर या संतों से की

जाए। जबकि वह केवल अल्लाह के अधिकार में है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

يـا أَيُّهَـا الَّـذِيْنَ آمَنُوا أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ •

(البقره:٢:٢٥٤)

"ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! (अर्थात जिन लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया है) हमने तुम्हें जो कुछ दिया उसमें से खर्च करो उससे पहले कि वह दिन आ जाए जिस दिन न कोई क्रय विक्रय होगा। तथा न कोई दोस्ती या सिफारिश ही काम आएगी तथा अल्लाह को नकारने वाले (काफिर) ही ज़ालिम हैं।"

जाएज़ एवं वैध सिफारिश वह है जो अल्लाह तआला से तलब की जाए तथा अल्लाह तआला की ओर से किसी सिफारिश करने वाले को सिफारिश का अधिकार देकर इज़्ज़त सम्मान प्रदान किया जाएगा। ये सिफारिश केवल उसके विषय में की जागी जिसके कौल, अमल से अल्लाह राज़ी हो। यह सिफारिश अल्लाह की अनुमति के बाद की जाएगी जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमायाः

مَن ذَا الَّذِىْ يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِه (البقره:٢:٢٥٥)

"कौन है जो इसके सामने बिना इसकी इजाज़त के सिफारिश कर सके।"

३. तीसरा नियमः

नबी सल्ल० ऐसे लोगों की ओर भेजे गए थे जो इबादत के

अनुसार चिन्तित व मुखतलिफ थे। उनमें कोई फरिश्तों को पूजता था कोई अंबिया अलैहि० तथा बुजुर्गों की पूजा करता था, कुछ वृक्षों तथा पत्थरों को पूजते थे। तथा कुछ सूरज चांद की पूजा करते थे। इन सभी से अल्लाह के रसूल सल्ल० ने बिना भेद भाव के जिहाद किया। अतः अल्लाह तआला ने फरमायाः

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّيْنُ كُلُّهُ لِلّه

(الانفال:٨:٣٩)

"और तुम इन (काफिरों) से लड़ो यहां तक कि फितना (शिर्क) न रहे तथा (हर कहीं) सारे का सारा दीन (मज़हब) अल्लाह का ही हो।

सूरज चांद के विषय में फरमायाः

وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِى خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُون • (حٰمٓ السجدة: ٤١:٣٧)

"और उसी अल्लाह की निशानियों में से रात और दिन, सूरज और चांद भी हैं। अतः तुम लोग न तो सूरज को माथा टेको और न चांद को यदि वास्तव में तुम उसी की इबादत करते होतो उस अल्लाह को सज्दा करो जिसने इन (सब) को पैदा किया है।"

फरिश्तों के विषय में फरमायाः

وَلا يَأْمُرَكُمْ أَن تَتَّخِذُوا الْمَلائِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا (آل عمران:٣:٨٠)

"और वह तुम्हें यह हुक्म नहीं देगा कि तुम फरिश्तों

तथा नबियों को रब बना लो।"

अंबिया अलैहि० के विषय में कहा:

وَإِذْ قَالَ اللّٰهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنتَ قُلتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَـٰهَيْنِ مِن دُونِ اللّٰهِ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ إِن كُنتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ •

(المائدة:٥:١١٦)

"और जब अल्लाह कहेगा, ऐ ईसा इब्ने मरयम! क्या तुमने लोगों से कहा था कि मेरी मां को अल्लाह के अतिरिक्त दो माबूद (पुज्य) बना लो? तो वह कहेंगे तू पाक पवित्र है, मेरे लिए जाइज़ नहीं कि मैं वह बात कहूं जिसका मुझे अधिकार नहीं, यदि मैंने यह बात कही हो तो अवश्य ही उसे जानता, तू उसे भी जानता है जो कुछ मेरे दिल में है तथा मैं उसे नहीं जानता जो कुछ तेरे नफस में है। बेशक तू ही सबसे बड़ा गैब (गुप्त बातों को) जानने वाला है।"

सालेहीन (सदा चारियों) के विषय में कहा:

أُولَـٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ　(بنی اسرائیل:١٧:٥٧)

"जिन्हें ये मुशिरक (मूर्ती पुजक) लोग पूजते हैं वे स्वयं अपने रब तक पहुंचने का माध्यम ढूंढते हैं कि उनमें से

कौन (अल्लाह से) निकटतम हो सकता है। तथा वे उसकी रहमत अनुकंपा की आशा रखते हैं तथा उसकी यातनाओं से डरते हैं।"

"पेड़ों तथा पत्थरों के विषय में फरमायाः

أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّى • وَمَنَاةَ الثَّالِثَةَ الْأُخْرَى (النجم:۵۳:۱۹،۲۰)

"तुम मुझे लात व उज़्ज़ा (अरब के प्रसिद्ध देवता) की सूचना दो तथा तीसरी (देवी) मनात की जो घटिया है।"

अबू आकिद लैसी रज़ि० बयान करते हैं कि (हम) नबी सल्ल० (के साथ में) हुनैन के लिए रवाना हुए (हमने अभी नये नये इस्लाम धर्म को स्वीकार किया था) तो मुशरिकीन के एक दरख्त के पास से गुज़र हुआ उस पेड़ को "ज़ात अनवात" कहते थे। वे उसमें असलहे लटकाते थे हमने कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० हमारे लिये भी ज़ात अनवात निश्चित कर दें जैसा कि उनके लिए है तो नबी सल्ल० ने फरमाया "सुबहानल्लाह! यही तो वह बात है कि जो कौमे मुसा ने मूसा अलैहि० से कही थी कि हमारे लिए भी माबूद (पुज्य) बाना दो, जैसे उनके माबूद (पुज्य) हैं। और कसम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है! हां तुम पूर्व अनुयाइयों के तरीकों पर चलोगे।"

(जामेअ तिर्मिज़ीःहदीस-२१८०)

४. चौथा नियमः

शिर्क (अल्लाक हो छोड़कर अन्य की पूजा करने वाले) के अनुसार हमारे युग के मुशरिकीन अधिक सख्त हैं। क्योंकि पहले युग के मुशरिकीन के खुशहाली तथा आसूदगी के समय शिर्क करते थे तथा कठिन समय में केवल अल्लाह को पुकारते थे। जबकि हमारे युग

के मुशरिकीन हर एक दशा में शिर्क करते रहते हैं चाहे खुशहाली हो या तंगी अल्लाह तआला ने फरमायाः

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ • (العنكبوت:٢٩:٦٥)

"फिर जब वे मुशरिकीन कश्ती में सवार होते हैं तो वे मात्र अल्लाह का आज्ञा पालन करते हुए उसे पुकारते हैं। फिर जब वह उन्हें खुश्की की ओर निजात (छुटकारा) देता है तो खुश्की पर आते ही वे शिर्क करने लगते हैं।"

وَصَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّم

☆☆☆☆☆

☆☆☆

☆

मकतबा अलफहीम की हिन्दी किताबें

1	मुख्तसर तफसीर अहसनुल बयान	मौलाना मोहम्मद जूनागड़ी	1152pg	450/-
2	बुलूगुल मराम	हाफिज़ इब्ने हजर असक़लानी	560pg	275/-
3	हुकूकुलएबाद	हाफिज़ सलाहुद्दिन यूसुफ	99pg	55/-
4	हुकूकुल औलाद	हाफिज़ सलाहुद्दिन यूसुफ	96pg	50/-
5	हुकूकुज़्ज़ौजैन	हाफिज़ सलाहुद्दिन यूसुफ	56pg	32/-
6	माता पिता के अधिकार	हाफिज़ सलाहुद्दिन यूसुफ	24pg	20/-
7	सैय्यदना अबू बक्र सिद्दीक रज़ि०	अशफाक़ अहमद खां	48pg	25/-
8	सैय्यदना उमर फारूक़ रज़ि०	अशफाक़ अहमद खां	48pg	25/-
9	सैय्यदना उसमान गनी रज़ि०	अशफाक़ अहमद खां	48pg	25/-
10	सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि०	अशफाक़ अहमद खां	48pg	25/-
11	इस्लाम पर चालीस एतेराज़ात...	डा.ज़ाकिर नाइक	160pg	80/-
12	कुरआन और विज्ञान	डा.ज़ाकिर नाइक	80pg	50/-
13	इस्लाम और हिन्दू धर्म में समानताएं	डा.ज़ाकिर नाइक	80pg	50/-
14	क्या कुरआन इश्वरीय ग्रन्थ है	डा.ज़ाकिर नाइक	112pg	60/-
15	विशेष धर्मों में इश्वर की कल्पना	डा.ज़ाकिर नाइक	48pg	28/-
16	इस्लामे में औरतों के अधिकार	डा.ज़ाकिर नाइक	112pg	60/-
17	इस्लाम आतंकवाद या भाईचारा	डा.ज़ाकिर नाइक	96pg	50/-
18	मांसाहार उचित या अनुचित	डा.ज़ाकिर नाइक	112pg	60/-
19	जन्नत का ब्यान	मो० इकबाल कीलानी	240pg	120/-
20	जहन्नम का बयान	मो० इकबाल कीलानी	264pg	130/-
21	नमाज़ के मसाइल	मो० इकबाल कीलानी	240pg	120/-
22	चेहरे का परदह मुस्तहब या वाजिब	मो० इकबाल कीलानी	24pg	20/-
23	सुन्नत के मसाइल	मो० इकबाल कीलानी	160pg	80/=

24	हमारी दावत कुरआन व सुन्नत	मो० इकबाल कीलानी	64pg	40/=
25	मुहम्मद हिन्दू कीताबों मे	मौलाना सफिउर्रहमान मुबारकपुरी	126pg	65/-
26	तावीज़ गंडा की हकीकत	शमीम अहमद सलफी	48pg	25/-
27	और मैं मर गया	मोसिन हेजाज़ी	56pg	32/-
28	मसला उर्स और ग्यारहवीं	हाफिज़ अब्दुल्लाहमोहद्दिस रोपड़ी	48pg	25/-
29	इस्लाम और इमान के अरकान	मुहम्मद जमील ज़ैनू	176pg	80/-
30	किताबुत्तोहीद	शैख मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब	160pg	75/-
31	कुरआन की शीतल छाया	डा०.ज़ेयाउर्रहमान आज़मी	176	85/-
32	अल्लाह और रसूल की पहचान	अब्दूस्समी मो. हारून	94pg	50/-
33	जादू का इलाज	शैख वहीद बिन अब्दुस्सलाम वाली	176pg	85/-
34	कलम-ए-तौहीद अर्थ महत्व फज़ीलत	शैख सालेह बिन फौज़ान	47pg	28/-
35	इस्लाम एक नज़र में	अब्दुस्समी मो. हारून	71pg	45/-
36	इस्लाम खालिस क्या है	मोहम्मद इस्माईल ज़र तारगर	56pg	22/-
37	इस्लामी अकीदा	मुहम्मद जमील ज़ैनू	48pg	22/-
38	मुसलमान का अकीदा(पाकेट)	मुहम्मद जमील ज़ैनू	64pg	12/-
39	मासूरह दुआएं	अबूसालिम मो० इस्माईल	96pg	30/-
40	हिसनुल मुसलिम	सईद बिन अली अलकहतनी	272pg	40/-
41	हिसनुल मुसलिम	सईद बिन अली अलकहतनी	207pg	35/-
42	और शिर्क से मैं ने तोबा कर ली	अमीर हमज़ा	-	u.print
43	अहले हदीस, अहनाफ में एख्तेलाफ..	मौलाना मोहम्मद साहब जुनागडी	-	u.print
44	सूफीइज़्म और इस्लाम	शैख मेराज रब्बानी	-	u.print
45	शबेबरात की रस्में	शैख असअद आज़मी	48pg	28/=
46	शबेबरात की वास्तविक्ता	शैख ज़याउल हसन सलफी	32pg	22/=
47	सीरत कुईज़	शैख साजिद ओसैद	96pg	50/=
48	मोहरे नबुअत	अल्लामा सुलैमान मन्सूर पूरी	48pg	28/=
49	कुरआन खवानी इसाले सवाब	शैख इब्ने बाज़	-	u.print

सैय्यदना
उमर फारूक़ रज़ि०

अश्फाक अहमद खां

Page: 48 Price:25/=

सैय्यदना
अबू बक्र सिद्दीक रज़ि०

अश्फाक अहमद खां

Page: 48 Price:25/=

सैय्यदना
अली मुर्तज़ा रज़ि०

अश्फाक अहमद खां

Page: 48 Price:25/=

सैय्यदना
उसमान ग़नी रज़ि०

अश्फाक अहमद खां

Page: 48 Price:25/=

इस्लाम एक नज़र में

अनूवाद
अब्दुस्समी मो. हारून
संशोधन
मो. ताहिर हनीफ

Page: 71 Price:45/=

पति पत्नी के अधिकार

हुक़ूक़ुज़्ज़ौजैन

हाफ़िज़ सलाहुद्दिन यूसुफ

Page: 56 Price:32/=

अल्लाह

उसके रसूल की पहचान

अनूवाद
अब्दूस्समी मो.हारून
संशोधन
मो. ताहिर हनीफ़

Page: 94 Price:50/=

اركان اسلام والايمان

इस्लाम और ईमान के स्तम्भ (अरकान)

क़ुरआन व सुन्नत से संकलित

लेखक
मुहम्मद बिन जमील ज़ैनू

Page: 176 Price:80/=

हाफ़िज़ अब्दुल्लाह साहब मुहद्दिस रोपड़ी रह०

Page: 48 Price:25/=

क्या कुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है?

डा. ज़ाकिर नाइक

Page: 112 Price:60/=

कुरआन और विज्ञान

डा. ज़ाकिर नाइक

Page: 80 Price:50/=

मो० इक़बाल कीलीनी

Page: 240 Price:120/=